CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृति

मूल और अर्थ सहित

जिसको

47.U

हिन्दू धर्म शास्त्र

मूल संस्कृत व उर्दू भाषा

CHECKED 1973

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गणेश आयनमः

वेद اور اسمرت کے جاننے والے سری ایشن جی علیحدہ بیٹھے ہوئے تھے - اونسے کلاپ گانون کے رہنے والے سب منونے پوچھا کہ ست یُگ کے انت مین سناتن دھرم چھین ہوگیا ہے اور اوسکے چھین ہونے سے دھرم کا مارگ نہین رہا ہے

श्रीगणेशायनमः ॥ विष्णुमेकाग्रमासीनंस्मृति स्मृतिविशारदम् । पप्रच्छुर्मुनयस्सर्वेकलापग्रामवासिनः १ कृतेयुगेत्वपक्षीणेधुमोधर्म्मस्सनातनः । तत्रवैशीर्य्यमाणेचधर्मानप्रतिमार्गितः २ त्रेतायुगेत्यसंप्राप्तेकर्तव्यश्चास्यसंग्रहः । यथासंप्राप्यतिस्मासित्तत्वन्नोवक्तुमर्हसि ३ वर्णाश्रमाणांयोधर्मोविशेषश्चैवयःकृतः । भेदस्तथैवचैषांवस्तन्नोब्रूहि द्विजोत्तमः ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

۱ اب تریتا جگ پراپت ہوا ہے سو اوسکو سنگرہ کرنا چاہیئے جس پر کارے ہم لوگون کو دھرم پراپت ہو سو آپ کہیئے ۴ برن واشرم کا جو بسیکھ دھرم کہا گیا ہے اور جو اونکا بھید ہے سو ہے رُجون مین اُتم ہم سے کہیئے

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ रक्षियों के समूह मैं आप की बड़ाई अुत्तम है और रहे सो बरत सब धर्मों का कोई कहने वाला और नहीं है ६ आप
जैसा धर्म कहेंगे वैसा हम लोग करेंगे। हे द्विज लोग धर्म के अुत्पत्ति आप से है अुस से आप कहिये

ऋषीणां समवेतानां त्वमेवपरमोमतः । धर्मस्येहसमस्तस्यनान्योवक्तास्तिसु
व्रत ४ अुत्वाधर्मंचरिष्यामोयथावत्परिभाषितम् । तस्माद्ब्रूहिद्विजश्रेष्ठधर्म
कामाद्धिजाः ५ इत्युक्तोमुनिभिस्तैस्तुविष्णुःप्रोवाचतांस्तदा । अन
घाः शृणुतांधर्म्मोवक्ष्यमाणोमयाक्रमात् ॥७॥ ब्राह्मणःक्षत्रियो
वैश्यःशूद्रश्चैवतथापरे । एतेषांधर्मसारंयद्वक्ष्यमाणंनिबोधत ॥ ८ ॥

७ जब मुनियों ने ऐसा कहा तब विष्णु जी बोले कि हे पाप रहित लोग हम धर्म को क्रम से कहते हैं सुनिये ८ ब्राह्मण
क्षत्री वैश्य शूद्र आर लोग इनका जो धर्म कहा जाता है सो सुनिये

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतौ ऋतौ तु संयोगाद्ब्राह्मणो जायते स्वयम् । तस्माद्ब्राह्मण्य संस्कारं गर्भादौ तु
प्रयोजयेत् ९ सीमंतोन्नयनं कर्म नास्यां संस्कार इष्यते । गर्भस्यैव तु संस्कारो
गर्भे गर्भे प्रयोजयेत ॥१०॥ जातकर्म तथा कुर्यात्पुत्रे जाते यथोदितम् ।
वहिर्निष्क्रमणं चैव तस्य कुर्याच्छिशोः शुभम् ११ षष्ठे मासे तु संप्राप्ते अन्न
प्राशनमाचरेत् । तृतीये ब्दे च संप्राप्ते केशकर्म समाचरेत् ॥ १२ ॥ १३ ॥

९ ऋतु ऋतु मैं संजोग से जो ब्राह्मन आप उतपन होता है - तिस से ब्राह्मन का संस्कार गर्भ के आदि मैं करना चाहिये १० सो मंत कर्म इस स्त्री का संस्कार नहीं है - गर्भ का संस्कार है सो हर गर्भ मैं करना चाहिये ११ पुत्र के उतपन मैं जात कर्म जैसा कहा हुआ है वैसा करना चाहिये - और लड़के के बाहर निकालने का शुभ कर्म करना चाहिये १२ छठे महीने मैं अन्न प्रासन और तीसरे बरस मुंडन करना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३ اگر بھوبکے آٹھوین برس مین براہمن کا جگیوپبیت کرنا چاہیئے تب دوجت پراپت ہونے سے گایتری کا ۵
اَدھکاری ہوتا ہے ۱۴ اگر بھوسے گیارہوین چھتری کا اور بارہوین بیس کا دوج کرم براہمن کراوے ۱۵ شودر

गर्भाष्टमे तथा कर्म ब्राह्मणस्योपनायनं । द्विजत्वे त्वथ संप्राप्ते सावित्र्यामधि
कारभाक् १३ गर्भादेकादशे सैके कुर्यात्क्षत्रियवैश्ययोः । काये द्विज क-
र्माणि ब्राह्मणेनयथाक्रमम् १४ शूद्रश्चतुर्थो वर्णस्तु सर्वसंस्कारवर्जितः ।
उक्तस्तस्यतु संस्कारो द्विजेस्वात्मनिवेदनम् १५ योयस्यविहितोदंडोमे
खलाजिनधारणम् । सूत्रंवस्त्रंचगृह्णीयाद्ब्रह्मचर्येणयंचितः ॥ १६ ॥ १६ ॥

چوتھا برن سب سنسکار سے رہت ہی - اوسکا سنسکار یہ ہے کہ اپنے کو دوج کی سیوا کا مین لین رکھے ۱۶ جسکو
جیسا دنڈ یا میکھلا یا اجن ارتھات چرم یا سوتر یا بستر کی آگیا ہے اوسکو برہم چرج کرکے گرہستی کرنا چاہیئے ۱۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशु.

१७ ब्रह्म मुहूर्त में रात्रि के दो घड़ी रात रहे उठकर तीन बार जल से आचमन करे। प्राणायाम करके चुप होकर बैठे हो

१८ ब्रह्मचारी अपनी आसन पर बैठकर के और जब तक सूर्य उदय न निकले तब तक गायत्री को जपता हुआ बैठा रहे १९

ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय चोपस्पृश्य पयस्तथा। चिन्तयेत्तत्तदः प्राणान्स्थिरेनैवेन्द्रियाणि च
समाहितः २० अन्नैवतैः पवित्रैस्तु कृत्वात्मपरिमार्जनम्। सावित्रीं च जपेत्तिष्ठेदासूर्योदयनात्सुरान् २१ अग्निकार्यं ततः कुर्यात्सायंप्रातरवन्दयेत्।
गुरुवेन्दनतः कुर्यात्सायंप्रातरभिवादनम् २२ समित्कुशप्रसूनोदकुम्भमाहरेत्तथा
गुरुवेश्रुती। प्राञ्जलिस्तिष्ठन्नासीनउपस्थायततःस्वयं २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

पीछे शौच करके होम करे फिर संध्या करे फिर गुरु के चरन कमल को दण्डवत करे २० ब्रह्मचारी को चाहिये कि लकड़ी-

फूल, पानी का घड़ा। लाकर हाथ जोड़कर अच्छी तरह से बैठे हुये गुरु के समीप रखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ जब जिन गुरु को पढ़ने वाला संकल्प करे। और गायत्री से आरंभ करके पीछे सब वेदों को पढ़े
२२ जब भिक्षा का समय आवे तो दो जातियों से भिक्षा लेवे। और गुरु के सामने रखकर गुरु की आज्ञा से भोजन करे

वेदंग्रंथमधीयीततत्पूर्वंस्नानंचरेत्। सावित्र्युक्तंमांसर्वमावेदंग्रहणे
त्वम् २१ द्विजातिपूर्वंरैक्ष्यंभिक्षाकालेसमागते। निवेद्यगुरवेभैक्ष्यंम्
नोमुक्तएवतत् २२ सायंसंध्यामुपासीनोगायत्र्यष्टशतंजपेत्। द्विकालमो
जनाभ्यांचतथैवपुनराहरेत् २३ वेदस्यीकरणेहयोगुर्वर्थीनोगुरोर्हितः
। निर्वर्तयेदयोगच्छेन्नैष्ठिकस्य उदाहृतः ॥२४॥२४॥२४॥२४॥

२३ सायंकाल संध्या करके १०८ बार गायत्री जपे। दूसरे काल के भोजन के लिये भी इसी प्रकार करे २४
वेद पढ़ने में प्रसन्न रहे गुरु के आधीन रहे और गुरु का हित करे। जो गुरु के पास बास करे तो नैष्ठिक कहाता है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ यही बड़ा अच्छी पुकार करे। और वेद पढ़ कर गृहस्थ धर्म की इच्छा करे तो गुरु के घर से चला आवे २६ इसी
पुकार बड़े से इस्तरी लेवे जो उत्तम कुल की सुलक्षण वा सुलक्षण हो २७ ब्याह करके छह महीने या बरस दिन जो

अनेन विधिना सम्यक्कृत्वा वेदमधीत्य च। गृहस्थधर्ममाकांक्षन्गुरुगेहादु
पागतः २५ अनेनैवविधानेन कुर्याद्दारपरिग्रहम्। कुलेमहतिसम्भूतांसव
र्णांलक्षणान्विताम् ॥२६॥ परिणीयतुषण्मासान्वत्सरंवानसंविशेत्।
औदुम्बरायणोनामब्रह्मचारीगृहेगृहे २७ ऋतुकालेतुसंप्राप्तेपुत्रार्थीसंवि
शेत्तरा। जातेपुत्रेतरा कुर्यादग्न्याधेयंगृहेवसन् ॥२८॥२९॥३०॥

घर न जावे तो उसको औदुंबर ऐसे ब्रह्मचारी घरों घरों में कहते हैं २८ ऋतु काल आने पर पुत्र के अर्थ घर में जावे।
पुत्र होने पर घर में रह कर अग्नि होत्र करे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ पुत्र होने पर निवृत्त गमन करे तो गृहस्थी को दोष होता है। चौथे पहर जो गृहस्थ आश्रम में रहने वाला ब्रह्मचारी
भूल जावे। विष्णु के धर्म शास्त्र का एक अध्याय समाप्त हुआ दूसरा आरंभ होता है ३० इसके ऊपर हम

पुत्रेजातेऽन्यतोगच्छन्संप्रदुष्येत्सदागृही। चतुर्थेब्रह्मचारीचगृहेतिष्ठन्न
विस्मृतः २९ इतिवैस्नवधर्मशास्त्रेप्रथमोध्यायः ॥१॥ अतःपरं प्रवक्ष्यामि
गृहीणांधर्ममुत्तमम्। प्राजापत्यपदस्थानंसम्यक्कृत्यंनिबोधत ३० सर्वःकल्पेसमु
त्थायकृतशौचस्समाहितः। स्नात्वासंध्यामुपासीतसर्वकालमतंद्रितः ३१ अज्ञाना
द्यदिवामोहाद्रात्रौयद्दुरितंकृतम् प्रातःस्नानेनतत्सर्वंशोधयंतिद्विजोत्तमाः ॥ ३२ ॥

गृहस्थ का उत्तम धर्म कहेंगे जिसके अच्छे प्रकार से करने से प्रजापत पद का स्थान प्राप्त होता है उसको सुनिये ३१ सब कोई प्रातःकाल उठकर
शौच करे और स्नान करे और निरालस होकर सब काल में संध्या किया करे ३२ अज्ञान में वा मोह से रात को जो पाप किया हो वह सब प्रातःस्नान करने से दूर हो जाता है इस वास्ते उत्तम द्विज अवश्य स्नान करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३ उसके पीछे जब साला मरजाय तब बड़े के साथ अग्नि में होम करे पीछे घर में बैठ कर अपने सामने भोजन का पात्र करे

३४ वेद पढ़ के पितरों को जानने वाला ब्राह्मण कुश और अग्नि और जल से देवता और ऋषि और पितरों को तृप्त करे ३५ फिर

प्रविश्याग्निहोत्रं तु हुत्वाग्निं विधिवत्ततः । शुचौ देशे समासीनस्त्वाध्याय
मधीतेऽग्रतः ३३ स्वाध्यायान्ते समुत्थाय स्नानं कृत्वा तु मंत्रवित् । देवान्
पितॄंस्तर्पयेत्तिलवारिणा ३४ मध्याह्नेऽथ संप्राप्ते शिष्टं भुंजीत वाग्य
तः । भुक्तोपविष्टो विश्रांतो ब्रह्म किंचिद्विचारयेत् ॥३५॥ इतिहासं प्रयुंजीत
निकालसमयेऽथ वा । काले चतुर्थे संप्राप्ते गृहे वा यदि वा बहिः ॥३६॥ ३६ ॥

आचमन होकर जो बचा हुआ हो उसे भोजन करे भोजन करके बैठकर शास्त्र और कुछ धर्म का विचार करे ३६ तीसरे पहर गृहस्थ इतिहास को पढ़े चौथे पहर घर में वा बाहर जाय * * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

۳۷ بیٹھکر پچھلی سندھیا کرکے جتنا ہوسکے گایتری کا جاپ کرے۔ اور اگ جلاکر اگن ہوتر ہوم کرے ۳۸ بدھ سمیت
بل دے کر بدھ پوربک بھوجن کرے۔ دن یا رات کو جو کوئی اتیتھ آجاے ۳۹ تو اوسکو آسن۔ جگہ۔ اور جل

आसीनः पश्चिमां संध्यां गायत्रीं शक्तितोजपेत्। हुत्वा चाथाग्निहोत्रंतु कृत्वा
चाग्निपरिक्रियां ३७ बलिंचविधिवद्दत्वाभुंजीतविधिपूर्वकम्। दिवावायदि
वारात्रौवांतिष्ठेत्स्वांव्रजेद्यदि ३८ तृणभूवारिवाग्भिस्तुपूजयेत्तथायोविधिं।
कथाभिःप्रीतिमाहत्यविद्यादीनिविचारयेत् ३९ मंनिवेश्यांयविप्रंतुसंनिधौ
नदनुव्रजेत्। यदियोगीनुसंप्राप्तोभिक्षार्थी समुपस्थितः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४० ॥

اور دھن سے پوجن کرے اور بات چیت سے پریت بڑھاکر بدیا آدکا بچار کرے ۴۰ اور اوسکو اچھے
پرکار بٹھالکر براہمن کی آگیا لے کر آپ بیٹھ جاوے جب کوئی جوگی بھکشا کے لیے آجاوے

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४१ تر جوگی کی ہتھ پوجا کرے نہین تو پاپی ہوے - جوگی چاہے پرمین ملے چاہے گانون مین ملے
४२ سب ہتاسی پوجا کرنے کے جوگ ہین اسلئے جو کوئی جوگی گھر مین آوے اوسکی پوجا کرنا چاہیے

योगिनंपूजयेन्नित्यमन्यथा किल्विषीभवेत् । पुरेवाथदिवाग्रामेयोगीसन्नि
हितोभवेत् ४१ पूज्यानित्यंभवत्येवसर्वैचैवनिवासिनः । तस्मात्संपूजयेन्नि
त्ययोगिनंगृहमागतम् ॥ ४२ ॥ तस्मिन्प्रयुक्तापूजायाः सास्वयायोपक
ल्पते । गृहमेधिनांयत्प्रोक्तंस्वर्गसाधनमुत्तमम् ॥४३॥ ब्राह्मेमुहूर्तउत्थाय
तत्सर्वंसम्यगाचरेत् । चतुःप्रकारंभिक्षंतेगृहिणोधर्मसाधकाः ॥ ४४ ॥

१२

अ० २

४३ اوسکی جو پوجا کیجاتی ہے اوس پوجا کی پرتن کا ناس نہین ہوتا ہے جو کہا ہی ہین وہ گرہستی کے لئے اُتم سرگ ساد ھن ہے
४४ برہم مہورت سے اوٹھ کر یہ سب کرنا چاہیے - دھرم سادھنے والے گرہست چار پرکار کے ہین

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४५ اور نین ایک سے دوسرا جیوکا کے بھید سے اُتم ہے۔ جیسکے پاس کُنبہ مین اَنّ ہووے جیسکے پاس گھڑے مین اَنّ ہو ۱۳
۴۶ جیسکے پاس تین دن کے لئے اَنّ ہو اور جو نِت لاتا ہو بید واسمرت مین جو دھرم کے سادھنے کی بدھ ہے۔

वृत्तिभेदेन सततं जायंते षांपरःभरः । कुसूलधान्यको वास्यात्कुंभीधान्यक एव
वा ४५ अहैहिको वापिभवेत्सद्यःप्रक्षालकोपिवा । श्रौतंस्मार्तंचयत्किंचिद्विधा
नंधर्मसाधनं ॥ ४६ ॥ गृहेतद्वसता कार्यमन्यथादोषभाग्भवेत् । एवंविप्रो
गृहस्थस्तुज्ञानतःशुक्लांवरःशुचिः ४७ प्रजापतेःपरंस्थानंसम्प्राप्नोतिनसंश
यः(इति·वै·धर्म·द्वि·ध्यायः) गृहस्थोब्रह्मचारीनावनवासंयदाचरेत् ॥ ४८ ॥

۴۷ وہ گرہستھ نکرے تو دوکھی ہوتا ہے۔ اسی پر کاد براہمن گرہستھ شانت اور اُجل بستر اور پوتر رہے ۴۸ نوبرہمچاری ۱۳
کی رُتم استھان کو پاوے اسمین سندیہ نہین ہے اودھیائے تیسرا گرہستھ یا برہم چاری جو بن باس کو جاوے۔ ۳

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४९ तो मौन होकर कपड़े की लंगोटी या छाल की लंगोटी पहिने और बे जोता बोया अन्न खावे
१४ नित्य जहां बसे वहां रहे और पंच जज्ञ को छोड़े ५० नित्य आदि अन्न से अग्नि होत्र

चीरवल्कलधारीस्यादकृष्टान्नाशनोमुनिः। गत्वाचविजनंस्थानंपञ्च यज्ञान्न
हापयेत् ४९ अग्निहोत्रंचजुहुयादन्ननीवारकादिभिः। श्रावणेनाग्निमाद
यब्रह्मचारीवनेस्थितः ॥५०॥ पंचयज्ञविधानेनयज्ञंकुर्यादतंद्रितः। सं-
चितंतुयदारण्यंभक्तार्थंविधिवदने ५१ त्यजेदाश्वयुजेमासिवन्यमन्य
त्समाहरेत् श्राकाससायीवर्षासुहेमंतेचजलेशयः ॥५२॥५३॥५४॥

करे- और बन में रहने वाला ब्रह्मचारी चारों सानों में अग्नि स्थापन करे ५१ और नित्य आलस न होकर पंच यज्ञ को बिधि से करे- बिधि से
जो बन का अन्न खाने के लिये रखा हो ५२ उसको कुठार से छोड़ कर नया अन्न बटोरे- बर्षा में आकास में रहे और जाड़े में पानी में रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५३ گرمی مین پنچ اگنی مین رہے اور سدا بن مین رہے کچھ اور چاندراین اور تلی پرکھہ ۵۴ اور رات کو چھہ کابرت بنا
کامنا کے کرے تینون سندھہ مین اسنان کیا کرے اور بھوت اپتن گنون کو ہرے ۵۵ بن مین گیا ہوا

ग्रीष्मेपंचाग्निमध्यस्थोभवेन्नित्यंवनेवसन् । कृच्छ्रंचांद्रायणंचैवतुलापु
रुषमेवच ५३ अतिकृच्छ्रंप्रकुर्वीतत्यक्त्वाकामान्शुचिस्ततः त्रिसंध्यंस्ना
नमातिष्ठेत्सर्वहिंसुर्भूतजानगुणान् ५४ पूजयेदतिथींश्चैवब्रह्मचारीवनंगतः
प्रतिग्रहंनगृह्णीयात्परेषांकिंचिदात्मवान् ॥ ५५ ॥ दाताचैवभवेन्नित्यंस्व
ध्यानःप्रियंवदः एवौस्थंडिलशायीस्यात्रपदेस्तुदिनंक्षिपेत् ॥ ५६ ॥

۵۶ برہم چاری ایتیھہ کی پوجا کرے - جتیندری ہوکر کسی سے دان نہ لے ۵۷ سدا داتا اور سردھا وان اور پریہ
بولنے والا رہے - رات کو چوترے پر سووے دن کو اوٹھہ کر بیٹھہ رہے

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५७ या बीरासन होकर बैठे और अपने को पीड़ा दान बजावे- और बाल रोम और नख और बगल और मूछ दाढ़ी न बनावे न कतरावे ५८
नाती गोती के लोगोंको छोड़ दे और पवित्र होकर बन ही मे बास किया करे- बत करने वाले मुनी मे चार प्रकार के भेद हैं ५९ उनमें

वारासनेनतिष्ठेद्वाक्लेशमात्मन्यचिंतयन्। केशरोमनखश्मश्रूनछिंद्यान्नापि
कर्तयेत् ५७ त्यजनशरीरसौहार्दवनवासरतःशुचिः। चतुःप्रकारंभिद्यंतेमुन
यःसंग्रिनव्रताः ॥ ५८ ॥ अनुष्ठानविशेषेणश्रेयांस्तेषांपरःपरः। वां
षिकंवन्यमाहारमाहृत्यविधिपूर्वकम् ॥ ५९ ॥ वनस्थधर्ममातिष्ठन्न
येत्कालंजितेन्द्रियः। भूरिसंवार्षिकश्चायंवनस्थःसर्वकर्मकृत् ॥ ६० ॥

उठने बैठने की इच्छा सिखा कर के एक से एक उत्तम है- बरखा काल मे बड़े से बड़ा जो न कर सके ६०
बन मे रहने के धरम से जितेन्द्री हो कर काल को बितावे इस प्रकार से जो बन मे रह कर काम करे उसको भूरिसंवार्षिक भी कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६१ जब तक जीवे तब तक रहे व्रत को निबाहे छः महीना तक। दूसरे पंच यज्ञ किया करे ६२ चौथे पहर
भोजन करे और धर्म से देह छोड़ दे। ३० दिन के लिये बन का अन्न बहुत है और पुष्कर व्रत से रहे

शादेहपतनंतिष्ठेन्मृत्युंचैवन कांक्षति । षण्मासांस्तुततश्चान्यःपंचयज्ञ
क्रियापरः ६१ कालेचतुर्थेभुंजानोदेहंत्यजतिधर्मतः । त्रिंशद्दिनार्थमाह
त्यवन्यान्नानि शुचिव्रतः ॥ ६२॥ निर्वर्त्य सर्वकार्याणिस्याच्चषष्ठा
न्नभोजनः । दिनार्थमन्नमादायपंचयज्ञक्रियारतः ॥ ६३॥ सद्यःप्रक्षाल
कोनामचंतुर्थःपरिकीर्तितः । एवमेतेहिवैमान्यामुनयःसंशितव्रताः ॥ ६४॥

६३ सब काम करने के पीछे छठवें पहर भोजन करे। और एकदन के लिये अन्न बहुत है और पंच यज्ञ क्रिया
में लगा रहे ६४ उसको चौथे प्रकार का सिद्ध पुरुष कहते हैं इस प्रकार के व्रत करनेवाले मुनि मानने के योग्य हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय ९ ४ दुष्टकर्म करने वाले उत्तम स्थान को प्राप्त होते हैं। ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ हो या
बान प्रस्थ या यति ५ सब काम को छोड़कर संन्यास धारण करे। अपनी आत्मा में अग्नि को कल्पना करे और आत्मा दक्षिणा देवे

इति वैष्णे धर्मे तृतीयोध्यायः ३ ॥ यथोक्तमानिस्थानानिप्राप्नुवंतिदृढव्रताः ।
ब्रह्मचारीगृहस्थोवावानप्रस्थोयतिस्तथा ६५ विरक्तःसर्वकामेषुपारिव्रा
ज्यंसमाश्रयेत् । आत्मन्यग्नीन्समारोप्यदत्त्वाचाभयदक्षिणाम् ६६ चतुर्थमा
श्रमंगच्छेद्ब्राह्मणःप्रव्रजन्गृहात् आचार्येण समादिष्टंलिंगंयत्ना त्समाश्रयेत् ६७ शौ
चमाश्रयसम्यङ्यतिधर्मांश्चशिक्षयेत् अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यमफल्गुता ॥ ६८ ॥

अ. ४ ४५ घर छोड़ा हो ब्राह्मण चौथे आश्रम में जावे। तो गुरु जो बतावे उसको जतन से धारण करे ४७ आश्रम सम्बन्धी शौच और यति का धर्म सीखे
+ + + + + + + + + + ४८ हिंसा न करे सच बोले चोरी न करे ब्रह्मचर्य रक्खे नीच कर्म न करे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६९ सब जीवोंपर दया रक्खे यह सब जती को सदा करना चाहिये गांवके किनारे पेड़के तले सदा रहे ७० कीड़े की तरह
घूमा करे बरसात मे एक जगह रहे - बूढ़ा या जवान या डरने वाले के साथ न रहे ७१ गांवमें एक वस्त्र पहने
या कौपीन पहने रहे ७२

दयाचसर्वभूतेषुनित्यमेतद्धतिश्चरेत । ग्रामांतेवृक्षमूलेचनित्यकालनिकेत
नः ईर्ष्टे पर्यटेत्कीटवद्भूमिंवर्षास्वेकत्रसंविशेत् । वृद्धानामातुराणांचभीरूणांस
गवर्जितः ॥ ७० ॥ ग्रामेवापिपुरेवापिवासोनैकत्रदुष्यति । कौपीनाच्छाद
नंवासः कथांश्रीतापहारिणीं ॥ ७१ ॥ पादुकेचापिगृह्णीयात्कुर्यान्नान्य
स्यसंग्रहं । संभाषणंसहस्त्रीभिरालंभप्रेक्षणेतथा ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ ७२ ॥

मे दुःख नहीं है - कौपीन के वास्ते कपड़ा और जाड़ा बचाने के वास्ते गोदड़ी ७१ खड़ाऊं लेवे रहे और
कुछ न बटोरे - स्त्री से न बोले न उसको छोटे न्याय से देखे + + + + + + + + + +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७३ ناچ گانا سبھا سیوا نندا نہ کرے۔ بان پرستھ اور گرہستھ کے ساتھ پریت نہ کرے ۷۴ اکیلے سدا
بچرے سب کا ساتھ چھوڑ دے۔ مانگے یا بے مانگے بھکشا سے جیو کا کرے ۷۵ مانگنے سے ملے وہ جاچت

नृत्यंगानंसभांसेवापरिवारांश्चवर्जयेत्। वानप्रस्थगृहस्थाभ्यांप्रीतिंयत्ने
नवर्जयेत् ७३ एकाकीविचरेन्नित्यंत्यक्त्वासर्वपरिग्रहम्। याचिता या
चिताभ्यांतुभिक्षयाकल्पयेत्स्थिति ७४ साधुकारंयाचितंस्यात्माकृप्रणीत
मयाचितम्। चतुर्विधाभिक्षुकाःस्युःकुटीचकवहूदकौ ७५ हंसःपरमहंसश्च
पश्चाद्योयःसउत्तमः। एकदंडीभवेद्वापित्रिदंडीवापिवाभवेत् ॥ ७४ ॥ ७६ ॥

ہے بنا مانگے ملے وہ کہا جاتا ہے۔ اور بھکشک چار پرکار کے ہین کوٹی چک اور بہودک ۷۶ ہنس اور پرم ہنس
جنمین پچھلا اگلے سے اتم ہے ایک ونڈی ہو یا تر ونڈی ہو

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७७ سب سُکھ کے سُواد کو اور پُتر ایشورج کے سُکھ کو چھوڑ دی - پُتر کے ساتھ سنسار سے پریت ہے
اسکو جتن سے چھوڑ دے ۷۸ دوسرے کے گھر مین بھوجن نہ کرے بھوجن کرنے سے دُوکھی ہوتا ہی - کام کرودہ لوبھ ہوگا

त्यत्क्वासर्वसुखास्वादंपुत्रेश्वर्यसुखंत्यजेत् । अपत्येसुखसन्नित्यंममत्वंयत्नत
स्त्यजेत् ७७ नानस्यगेहेभुंजीतभुंजानोदोषभाग्भवेत् । कामंक्रोधंचलो
भंचततैर्व्यसंत्यमेवच ॥ ७८ ॥ कुटीचकस्त्यजेत्सर्वंपुत्रार्थंचैवसंर्वतः
भिक्षाटनादिकेशक्तोयतिःपुत्रेषुसंन्यसेत् ७९ कुटीचकदृतिज्ञेयःप
रिव्राट्त्यक्तबांधवः । त्रिदंडकुडिकांचैवभिक्षाधारंतथैवच ॥८०॥८०॥

نِندا کوٹ ۷۹ اور پُتر کام ان سبکو کوئی چک چھوڑ دی - بھیکھ نہ مانگ سکے تو پُتر کے یہان رہے ۸۰ اِسکو کوئی چک
کہتے ہین بھائی بندھ سب کچھ چھوڑ کر ترِدنڈ اور کوئی اور بھیکھ کا برتن

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८१ लिये रहे सूतर को सदा लिये रहे वो बोदक है- प्रानायाम करके सदा गायत्री को जपा करे ८२ परमेश्वर का हृदये
मेन धेयान किया करे और इंद्रिजयी होकर काल बितावे थोड़ा रंगा हुवा कपड़ा लिये रहे ८३ ये मरजादा इन के

सूत्रंतथैवगृह्णीयान्नित्यमेववहूदकः । प्राणायामेष्यभिरतोगायत्रींसततं
जपेत् ८१ विश्वरूपंहरिध्यायन्नयेत्कालंजितेन्द्रियः । इषत्कृतकषा
यस्यलिंगमास्त्रित्यतिष्ठतः ॥ ८२ ॥ अन्नार्घंलिंगमुद्दिष्टंनमोक्षार्थमितिस्थि
तिः । त्यत्कापुत्रादिकंसर्वंयोगमार्गव्यवस्थितः ८३ इन्द्रियाणिमनश्चै
वकर्षन्हंसोभिधीयते । कृच्छ्रैश्चान्द्रायणैश्चैवतुलापुरुषसंज्ञकैः ॥ ८४ ॥

लिये है सो कुछ के लिये नहीं है- पुत्र आदि छोड़कर जोग मार्ग मेन रहे ८४ इंद्री और मन को जीते रहे उसको
हंस कहते हैन- कृछ्र और चांद्रायन और तुला पुरुष करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८५ और २ और परकारसे ब्रह्मपद की इच्छा करके दिवा कौपीन कहावे जगोपवीत और दण्ड और जन्तु उड़ाने का कपड़ा
८६ इसी को वेद का जानने वाला हंस लिये रहे और कुछ नहीं आधीरात तक ब्रह्म को जपे वैसे ही प्राणायाम करे ८७ सबको

अन्यैश्चशोषयेद्देहमाकक्षन्ब्रह्मणःपदम्। यज्ञोपवीतंदंडंचवस्त्रंचंतुनिवा
रणम् ८५ अयंपरिग्रहोनान्योहंसस्यश्रुतिचोदितः। आध्यात्मिकंब्रह्मज
पन्प्राणायामांस्तथाचरन् ॥ ८६॥ वियुक्तःसर्वसंगेभ्योयोगीनित्यंचरे
न्महीम्। आत्मनिष्ठस्त्वयंयुक्तस्त्यक्तःसर्वपरिग्रहः ८७ चतुर्थोयंमहा
मेषांध्यानभिक्षुरुदाहृतः। त्रिदंडंकुंडिकांचैवसूंचीचायकपालिकाम् ॥८८॥

छोड़कर जोगी पृथ्वी पर घूमा करे सबको छोड़कर आत्मा में लीन और सबसे निर्गुण रहे ८८ इन में चौथा बड़ा ध्यान
भिक्षु कहलाता है त्रि दण्ड और कुण्डी और सूंची और कपालिका

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८९ जो जंतु उडाने का कपडा झिंझक छोड दे। नाग डालने के लिये कोपीन पहने रहे ९० परम हंस एक दंड लिये। और आप अपनी आत्मा को जान कर सब को छोड देवे ९१ लिंग को छिपाये हुये और छिपा

जंतूनां वारणं त्वंसर्वभिक्षुरित्यजेत् । कौपीनाच्छादनार्थं च वासोधस्य परिग्रहम् ८९ कुर्यात्परमहंसस्तु दंडमेकं च धारयेत् । आत्मन्येवात्मना बुद्ध्या परित्यक्तशुभाशुभः ॥ ९० ॥ अव्यक्तलिंगोऽव्यक्तश्चरेद्भिक्षुस्समाहितः । मानपूजो न संतुष्येदलाभे त्यक्तमत्सरः ९१ त्यक्ततृष्णस्सदा विद्वान्मूकवत्पृथिवीं चरेत् । देहसंरक्षणार्थं तु भिक्षामीहेद्द्विजातिषु ॥ ९२ ॥

हुआ झिंझक एक चित्त हो गोते। न पूजा पाने से संतोष करे न बिना पाये दुखी हो ९२ और सदा लोभ छोड कर गूंगे की तरह बिचरे। वान प्रस्थी के घर से भिक्षा लेवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९३ ہاتھون کو برتن نہ سمجھکر ہمیشہ گھرون مین جاے - تیج کا برتن بھکشا کے لئے مَن جی نے کلپت کیا ہے ۲۵
९४ اور سب بھکھاریون کے لئے کا بھہ اور لوکی ہے - کانسے کے برتن مین کبھی آپت مین بھی نہ کھاے

पात्रमस्यभवेत्पाणिस्तेननित्यंगृहानटेत् । अतैजसानिपात्राणिभिक्षार्थंक्रम
वान्मनुः ९३ सर्वेषामेवभिक्षूणांदार्वलाबुमयानिच । कांस्यपात्रेनभुंजीत
आपद्यपिकथंचन ॥ ९४ ॥ मलाशास्सर्वउच्यंतेयतयःकांस्यभोजनः । कां
सिकंस्यतुयत्पापंगृहस्थस्यतथैवच ॥ ९५ ॥ कांस्यभोजीयतिःसर्वंतयोप्रा
प्नोतिकिल्विषं । ब्रह्मचारीगृहस्थस्यवानप्रस्थोयतिस्तथा ॥ ९६ ॥ ९६

९५ جو جتی کانسے مین کھاتے ہین وہ مل کھانے والے کہلاتے ہین کانسے کے برتن مین کھانے سے اور گرہستھ کے ۲۵
یہان کھانے سے جو پاپ ہوتا ہے ۹۶ ان دونون کا سب پاپ کانسہ کے کھانیوالیکو لگتا ہے برہمچاری و اگرہستھ و ابان پرستھ و جتی ۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९७ جو آتم برت پاکر پھر آوے تو اوسکو آروڑھ پتت جاننا چاہیئے اور وہ سب دھرمون سے باہر ہو جاتا ہے
९८ سب دیوتا اور رشی سب پتر اوسکی نندا کرتے ہین ترونڈ چھپہ رکھکر بھوتیرے دُج جیو کا کرتے ہین ۔

उत्तमां वृत्तिमाश्रित्य पुनरावर्तयेद्यदि। आरूढपतितो ज्ञेयस्सर्वधर्मबहिष्कृतः
॥ ९७ ॥ निंद्यश्च सर्वदेवानां पितृणां चथोच्यते। त्रिदंडलिंगमाश्रित्य जीवंति
वहवोद्विजाः ॥ ९८ ॥ नतेषामपवर्गोस्ति लिंगमात्रोपजीविनां। त्य
क्तालोकांश्चवेदांश्चविषयाणींद्रियाणिच ९९ आत्मन्येवस्थितोयस्तुप्राप्नोतिपर
मंपदम्। इतिवैखानसधर्मशास्त्रे चतुर्थोध्यायः४ राजांतुपुण्यवृत्तानांत्रिवर्गपरिकांक्षिणाम् १०० ॥१००॥

९९ سو جو چھپہ سے جیتے ہین انکی مُوکش نہین ہوتی لوک کو بید کو بکھے اِندری کو چھوڑکر ۱۰۰ جو آتما مین لین رہے
وہی پرم پد کو پراپت ہے اوھیائے پانچوان تریورگ کی کامنا رکھنے والے پُنیاتما راجاؤن کو

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०१ جو دھرم کہا جاتا ہے اوسکو سنچے کر کے جانے - تیج اور ست اور دھیرج اور چترائی اور لڑائی سے نہ بھاگنا १०२
دان اور ایشور بھاو یہ چھتری کا دھرم ہے - اور چھتری کا بڑا دھرم پرجا کی پالن کرنا ہے १०३ اِس سے راجا سب پرکار

वक्ष्यमाणस्तु योधर्मस्तत्वतस्तन्निबोधत । तेजस्त्वंधृतिर्दाक्ष्यंसंग्रामेष्वनि
वर्तिता १०१ दानमीश्वरभावश्चक्षत्रधर्मःप्रकीर्तितः । क्षत्रियस्यपरोधर्मःप्र
जानांपरिपालनम् ॥ १०२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनरक्षयेन्नृपतिःप्रजाः । चौ
णिकर्माणिकुर्वीतराजन्यस्तुप्रयत्नतः ॥ १०३ ॥ दानमध्ययनंयज्ञस्ततोयो
गनिषेवणम् । ब्राह्मणानांचसंतुष्टिमाचरेत्सततंतथा ॥१०४॥१०४॥

سے پرجا کی رکشا کرے - تین کرم چھتری کو جتن کر کے کرنا چاہیے १०४ دان دینا جگ کرنا بید پڑھنا اسکے پیچھے جوگ
کا ابھیاس کرنا - اسی پرکار براہمنوں کو سدا سنتشٹ رکھنا چاہیے

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०५ اِنکے سنتشٹ رہنے سے راج اور کوش بڑھتا ہے - بیاپار اور کھیتی اور گئو کا پالنا ۱۰۶ براہمن
اور چھتری کی سیوا یہ بیس کا کرم کہا گیا ہے - کھیتی کا کھریان اور گئون کی سیوا جتن سے — + +

तेषुतुष्टेषुनियतंराज्यंकोशश्चवर्द्धते । वाणिज्यंकर्षणंचैवगवांचपरिपाल
नम् १०५ ब्राह्मणक्षत्रसेवाचवैश्यकर्मप्रकीर्तितम् । खलयज्ञंकृषीणांच
गोयज्ञंचैवयत्नतः ॥ १०६ ॥ कुर्याद्वैश्यश्चसततंगवांचपरिपालनम् । ब्राह्मण
क्षत्रवैश्यांश्चचरेन्नित्यममत्सरः ॥ १०७ ॥ कुर्वंस्तुशूद्रःशुश्रूषांलोका
नजयतिधर्मतः । पंचयज्ञविधानंतुशूद्रस्यापिविधीयते ॥१०८ ॥१०८॥

१०७ کرنا - اور اسی پرکار گئوون کا رکھنا بیس کا کام ہے براہمن چھتری بیس کی ۱۰۸ سیوا کرنے والا
سودر دھرم سے لوک کو جیتتا ہے - بدھ سے پنچ جگت کرنا سودر کو بھی اُچت ہے + + + + + + + + +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०९ یہ کہا گیا ہے کہ اُسکو نت نمسکار کرنے مین ہان نہین ہوتی - شودر دو پرکار کے گنتا چاہیئے سرادھی اور بھنّ
११० اِن دونون مین سرادھی بھوجّ ہے اور جو بھنّ اوس سے ہے وہ اَبھوجّ ہے - پران اور دھن اور استری

29

तस्यप्रोक्तोनमस्कारः कुर्वन्नित्यंनहीयते । शूद्रोपिद्विविधोज्ञेयः श्राद्धी
चैवेतरस्तथा १०९ श्राद्धीभोज्यस्तयोरुक्तोह्यभोज्यास्त्वितरोमतः । प्राणधी
स्तथादानान्नाह्मणार्घन्निवेदयेत् ११० सशूद्रजातिर्भोज्यःस्याद्भोज्यंःशेष
उच्यते । कुर्याच्छूद्रस्तुशूद्रांब्रह्मक्षत्रंविशंक्रमात् १११ कुर्यादत्तुर
योवैश्यःक्षत्रियोब्राह्मणस्यतु । शास्त्रमस्तुत्रयःप्रोक्तावैश्यराजन्ययोस्तथा११२

براہمن کو نمیدن کرے ۱۱۱ ایسا سودّر بھوجّ ہے اور سیکھیہ اَبھوجّ ہے - سُودّر کرم سے براہمن چھتری بیس
کی سیوا کرے ۱۱۲ اُس سے اُوپر جو بیس چھتری ہے وہ براہمن کی سیوا کرے بیس اور چھتری کے لئے تین آشرم کہا گیا ہے

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११३ सन्यास आश्रम ब्राह्मन ही के वास्ते कहा गया है - आश्रमों का मेला सनातन धर्म ३०
कह चुके

पारिव्राज्याश्रमप्राप्तिः ब्राह्मणस्यैवचोदिता । आश्रमाणामयंप्रोक्तोम
यादृर्मसनातनः२३ यदत्राविदितंकिंचिनदन्येभ्योगमिष्यथ
इतिश्रीविष्णुप्रोक्तंधर्मशास्त्रंसमाप्तम्सम्पूर्णम्शुभम्मस्तु ॥ॐ॥

हस्ताक्षर स्वामीदयाल

अब जो कुछ बाकी है वह फिर कहेंगे - बिष्णु स्मृति समाप्त हुई बलम स्वामी दयाल ग्र. ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

سری گنشائیمہ - جو برن اور آسرم کے دھرم مین ٹھہرے ہین وے کیشو کے بھگت ہین - یہ آپ نے
پہلے کہا ہے اور وے ہے دوج تینون لوک مین اُتم ہین اسلئے برن و آسرم کا دھرم ہمسے کہئے - جس دھرم سے سناتن دیو نرسنگھ

ہا۔ سو

۱

۲

श्रीगणेशायनमः॥ येवर्णाश्रमधर्म्मास्यास्तेभक्ताःकेशवंप्रति। इति
पूर्व्वंत्वयाप्रोक्तंभूर्भुवःस्वर्द्विजोत्तमाः १ वर्णानामाश्रमाणाञ्चधर्म्मान्नो
ब्रूहिसत्तम। येनसन्तुष्यतेदेवोनारसिंहःसनातनः २ तत्राहंकथयिष्यामि
पुरावृत्तमनुत्तमं। ऋषिभिःसहसंवादंहारीतस्यमहात्मनः ३ हारीतंसर्व्वधर्म्म
ज्ञमासीनमिवपावकं। प्रणिपत्याब्रुवन्सर्वेमुनयोधर्म्मकाङ्क्षिणः॥ ४॥

۱

۲

پرسن ہون ۲ یہان ہم پُرانا اُتم برتانت کہینگے - جو رکھیون سے ناریت مہاتما نے کہا ہے ۳ سب دھرم کے جاننے والے
اگن کے سمان بیٹھے ہوئے ناریت جی سے - دھرم کے چاہنے والے مُنیون نے پرنام کر کے پوچھا ۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे भगवान आप सब धर्म के जानने वाले और प्रचार करनेवाले हैं सो हे भगवन वर्ण आश्रम का धर्म हमसे कहिये ५
और पीछे जो योग शास्त्र जिस से विष्णु की भक्ति होती है। सो और और भी आप हमसे कहिये क्योंकि आप हमारे परम गुरु हैं ६

भगवान सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मप्रवर्तक । वर्णानामाश्रमाणाञ्चधर्म्मान्नो
ब्रूहिभार्गव ५ समासाद्योगशास्त्रंचविष्णुभक्तिकरंपरं। एतच्चान्यच्च भ-
गवन्ब्रूहिनःपरमोगुरुः ॥ ६ ॥ हारीतस्तानुवाचाथतैरेवंचोदितोमु-
निः। शृण्वन्तुमुनयःसर्व्वेधर्म्मान्वक्ष्यामिशाश्वतान ७ वर्णानामा
श्रमाणंचयोगशास्त्रञ्चसत्तमाः। सन्त्याज्यमुच्यतेमर्त्योजन्मसंसारबंधनात ८

उन लोगों के ऐसा कहने पर हारीत जी बोले। हे सब मुनि लोग मैं सनातन धर्म कहूंगा सो सुनिये हे बड़े लोगो
वर्ण आश्रम और जोग शास्त्र को अच्छे प्रकार धारन करने से मनुष्य संसार के बन्धन से छूट जाता है ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

پہلے جگت کا بنانے والا پرماتما دیو میں سیجیا پر جل کی اوپر اچھی نیند سوتا تھا ۹ یہ پرسِدّھ ہے کہ اوسکے سوتے ہوئے نابھ
سے ایک بڑا کمل اُتپن ہوا - اور کمل سے سب بید بیدانگ بھوکھن ہے جنکا سوبرہماجی اُتپن ہوئے ۱۰ تب دیو نے اونسے

पुराद्देवोजगत्स्रष्टापरमात्माजलोपरि। सुषापंभोगिपर्य्यङ्केशयनेतुस्त्रियासह
६ तस्यसुप्तस्यनाभौतुमहत्पद्ममभूत्किल। पद्ममध्येऽभवद्ब्रह्मावेदवे
दाङ्गभूषणः ॥१०॥ सचोक्तोदेवदेवेनजगत्स्रजपुनःपुनः सोपिसृष्टाज
गत्सर्व्वंसदेवासुरमानुषम् ॥ ११ ॥ यज्ञसिद्ध्यर्थमनघान्क्रमाणान्सु
खतोसृजत् । असृजत्क्षत्रियान्बाहोर्वैश्यान्पुरुदेशनः ॥ १२ ॥

بارم بار جگت بنانے کے لئے کہا - اونھوں نے سب جگت دیوتا راچھس سنگھ سہت بنایا ۱۱ جگ سِدّھ کے
لئے پاپ رہت براہمنوں کو مکھ سے بنایا - چھتریوں کو باہو سے بیشیوں کو جانگھ سے بنایا ۱۲ + ۱۲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूद्रोंको पानीसे बनाया और उनके लिये करम से - ब्रह्म जोन भगवान ब्रह्माने जो कहा है सो १३ उनका बचन
हम कहते हैं सो है उनमें तुम दोज लोगो सुनो - वह धन और जस और आयु और सुरग और मोक्ष फल देता है १४ ब्राह्मन से

मूद्रांश्च पादयोस्सृष्टतेषाञ्चैवानुपूर्व्वशः । यथाभीवाचभगवान ब्र
ह्मयोनिंपितामहः १३ तद्वचःसंप्रवक्ष्यामि शृणुतद्विजसत्तमाः । ध
न्यंयशस्यमायुष्यंस्वर्ग्यंमोक्षफलप्रदं १४ ब्राह्मणांब्राह्मणेनैवमुत्पन्नो
ब्राह्मणस्मृतः । तस्यधर्म्मंप्रवक्ष्यामितद्योग्यंदेशमेवच १५ कृष्णसारोमृगो
यत्रस्वभावेनप्रवर्तते । तस्मिन्देशेचसेद्धर्म्मःसिद्धतिद्विजसत्तमाः ॥ १६ ॥

ब्राह्मनी मेन जो उत्पन्न होता है वह ब्राह्मन कहलाता है - उनका धरम और उनके जोगे जो देस है वह हम कहते हैं १५ काला हिरन
सोभावसे जहान रहता हो - उसी देस मेन धरम रहता है और है तुम दोज लोगो यह पूरा है १६ + १६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महातमा ब्राह्मनों के छहे कर्म कहे गये हैं इनको जो सदा बरतता रहता है वह सुख पाता है १७ बेद पढ़ाना और बेद पढ़ना और जगेय करना और दान देना और दान लेना यह छहे कर्म कहाते हैं १८ बेद पढ़ाना तीन

षट्कर्माणि निजान्याहुर्ब्राह्मणस्य महात्मनः । तैरेवसततंयस्तुवर्तयेन्सु
खमेधते १७ अध्यापनंचाध्ययनंयाजनंयजनंतथा । दानंप्रतिग्रहश्चेति
षट्कर्म्माणीति चोच्यते १८ अध्यापनञ्चत्रिविधंधर्म्मार्थमृत्थकारण
न । शुश्रूषाकरणञ्चेतित्रिविधंपरिकीर्तितं १९ एषामन्यतमाभावे
वृथाचारोभवेद्विजः । तत्रविद्वानदातव्यापुरुषेणहितैषिणः ॥ २० ॥

प्रकार का है धरम के और धन के कारन । और सेवा करने के लिये इनको तीन प्रकार कहते हैं १९ इसमें कोई
नहो तो द्विज का आचार बृथा है । इसको जो कोई अपना हित चाहे बेद पढ़ावे २० + २० + २०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीखिये जो जोगीये हैं उनको बेद पढ़ावे अजोगीये को नहीं - बेद पढ़के सुनके गृहस्थ धरम में धरम पर सिद्ध करने के लिये
दान लेवे २१ नित्त पवित्र देस में रहके बेद का अभ्यास करे - और सिद्ध मन वाले ब्राह्मन धरम शास्त्र का पाठ

योग्यानध्यापयेच्छिष्यानयोग्यानपिवर्जयेत्। विदितान्प्रतिगृह्णीया
द्गृहेधर्म्मप्रसिद्धये २१ वेदञ्चैवाभ्यसेन्नित्यंशुचौदेशेसमाहितः। धर्म
शास्त्रंतथापाभंब्राह्मणैःशुद्धमानसैः २२ वेदवित्पठितव्यंचश्रोतव्यंच
दिवानिशि। स्मृतिहीनायविप्रायश्रुतिहीनेतथैवच २३ दानंभोजनम
न्यच्चदत्तंकुलविनाशनं। तस्मात्सर्वप्रयत्नेनधर्म्मशास्त्रंपठेद्द्विजः। २४।

कहीं २२ बेद का जानने वाला रात दिन पढ़े और सुने + स्मृति से हीन और वैसे ही श्रुति से हीन ब्राह्मन को २३
दान और भोजन और और कुछ देने से कुल का नास होता है - इसलिये सब जतन से दूज को धरम शास्त्र पढ़ना चाहिये २४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवने सरस्वती और ब्रह्मन की आंखें बनाई हैं - जो एक नेत्र तो काना और दोनों नेत्र तो अंधा कहलाता है
२५ जिता इंद्रिय होकर गुरु की सेवा करे - सांझ और सवेरे अग्नि होत्र का संस्कार करे २६

श्रुतिस्मृतीचविप्राणांचक्षुषीदेवनिर्म्मिते। काणस्तत्रैकयाहीनोद्वाभ्याम
न्धःप्रकीर्तितः २५ गुरुशुश्रूषणञ्चैवयथान्यायमतंद्रितः। सायंप्रातरुपा
सीतविवाहाग्निंद्विजोत्तमः २६ मुस्नातस्तुप्रकुर्व्वीतवैश्वदेवंदिनेदिने
। अतिथीनागताञ्छक्त्यापूजयेदविचारतः २७ अन्यानभ्यागतान्वि
प्रःपूजयेच्छक्तितोगृही। स्वदारनिरतोनित्यंपरदारविवर्ज्जितः॥ २८ ॥

और दिन दिन स्नान करके वैश्वदेव कर्म करे - जो अतिथि आवे उसको बनाविचार पूजा करे २७ दूसरा जो
कोई आवे उसकी पूजा ब्राह्मण जैसे हो सके करे - सब दिन अपनी स्त्री से रत रहे और पराई स्त्री को वर्जे २८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंभीर बुद्धि हो कर साजे और सोवरे होम करके भोजन करे सत्य बोले क्रोध को जीते अधर्म मे बुद्धि को न लगावे
२९ अपने कर्म मे लगा रहे और अगियानता से उसको न छोड़े — सत्य बात जिस से परलोक मे कल्यान होता है बोलावे

कृतहोमस्तुभुञ्जीतसायंप्रातरुधाधीः। सत्यवादीजितक्रोधोनाधर्म्मेवर्तयेन्मति २९ स्व
कर्म्मणिचसंप्राप्तेप्रमादाद्वनिवर्तते। सत्यंहितंवदेद्वाचांपरलोकहितैषिणीं।३०। एष
धर्म्मःसमुद्दिष्टोब्राह्मणस्यसमासतः। धर्म्मंवदिष्यःकुर्य्यात्सजातिब्रह्मणःपदं ३१ इ
त्येषधर्म्मःकथितोमयायंपृष्टोभवद्भिस्त्वखिलाघहारी। वदामिराज्ञामपिचैवधर्म्मान्एष
कृष्टग्वोधतविप्रवर्य्याः ३२ इतिहारीतधर्म्मशास्त्रेप्रथमोऽध्यायः॥१॥

३० ब्राह्मन का धर्म संक्षेप से कहा गया - जो धर्म करता है सो ब्राह्मन कहलाता है ३१ ये धर्म जो पाप का हरने
वाला है सो आप लोगों के पूछने पर मैंने कहा - अब राजा का धर्म कहते हैं सो ही सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मनो सुनो जानो ३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सری भاरीत جی کے دھرم شاستر کا دوسرا اَدھیاے چھتریونکا جو دھرم ہے وہ کرم سے کہتے ہین ۱

جسمین بِدھِ سے بگلے ہوئے سب پرم گت کو پاتے ہین ۱ راج گدی پر جو چھتری ہو وہ دھرم سے پرجا کو پالتا ہوا - اچھے پرکار سے بید پڑھے

क्षत्रादीनांप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्व्वशः । येषुप्रदत्तविधिनासर्व्वेयांतिपरांगतिं
१ राज्यस्थःक्षत्रियश्चापिप्रजाधर्म्मेणपालयन् । कुर्य्यादध्ययनंसम्यगयजेद्य
ज्ञान्यथाविधि २ दद्याद्दानंद्विजातिभ्योधर्म्मवृद्धिसमन्वितः । स्वंभार्य्यानि
रतोनित्यंषड्भागार्हःसदानृपः ३ नीतिशास्त्रार्थकुशलः सन्धिविग्रहत
त्त्ववित् । देवब्राह्मणभक्तश्चपितृकार्य्यपरस्तथा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

اور جتھا بِدھِ جگیہ کرے ۲ دھرم بُدّھ سے جکت جو چھتری سو براہمن کو دان دے - اپنی استری مین رت رہے اور راجا چھٹھوان بھاگ لے ۳

نیت شاستر کی ارتھ مین چتر رہے ملاپ اور لڑائی کے تتّو کو جانے - دیوتا اور براہمن کا بھگت رہے اور اسی پرکار سے پتر کام کری ۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर्म को छोड़कर धर्म से जीविका करे - क्षत्री जो ऐसा करे तो उत्तम गति को पावे ५ गऊ की रक्षा और खेती और
व्यापार वैश्य वृत्ति करे - ब्राह्मण की दासता और भोजन दे ६ दम्भ मोह और मद को छोड़ देवे

धर्म्मेणयजनंकार्य्यमधर्म्मपरिवर्जनं । उत्तमांगतिमाप्नोतिक्षत्रियोऽप्येव
माचरन् ५ गोरक्षांकृषिवाणिज्यंकुर्य्याद्वैश्योयथाविधि । दानंदेयंयथाशक्त्या
ब्राह्मणानांचभोजनं ॥ ६ ॥ दम्भमोहविनिर्मुक्तस्तथावागनसूयकः । स्व
दारनिरतोदान्तःपरदारविवर्जितः ७ धनैर्विमानभोजयित्वायज्ञका
लेतुयाजकान् । अप्रभुत्वञ्चवर्तेतधर्म्मेषादेहपातनात् ॥ ८ ॥ ८ ॥

१०

अ. २

इसी प्रकार निंदा की बात न कहे - अपनी स्त्री मेंरत रहे और पराई स्त्री को न देखे - ७
जग की समय जग कराने वालों को धन से भोजन करावे - जब तक शरीर है धर्म में दृढ़ रहे ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जگ اور اَدھین اور دان سدا نرآلس ہو کر کیا کرے - پتر کرم اور نر سنگھ کی پوجا مین تت پر رہے ۹ اپنے دھرم
کرنے والے بیس کا یہی دھرم ہے - اس پرکار جو آچرن کرے وہ نر سندیہ سورگ مین باس کرے ۱۰

यस्त्वध्ययनदानानिकुर्य्यान्नित्यमतन्द्रितः। पितृकार्य्यपरश्चैवनरसिंह
र्चनापरः ९ एतद्वैश्यस्यधर्म्मोयंस्वधर्म्ममनुतिष्टति। एतदाचरतेयोहि
सस्वर्गीनांच संशयः ॥ १०॥ वर्णत्रयस्यशुश्रूषांकुर्य्याच्छूद्रःप्रयत्नतः।
दासवद्ब्राह्मणानाञ्चविशेषेणसमाचरेत् ११ प्रयाचितप्रदानाच्चकष्ट
वृत्त्यर्थमाचरेत्। पाकयज्ञविधानेनयजेद्देवमतन्द्रितः ॥ १२॥१२॥

شودر جتن سے تینون برن کی سیوا کرے - بشیکھ کر کے براہمن کی ٹہل کرے ۱۱ بنا مانگے دان دے
اور جیوکا کے واسطے کلیس کرے - نرآلس ہو کر بدھ سے رسوئین بنا کر دیوتاؤن کو آرپن کرے ۱۲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्य जगत् शूद्रों की अधिक पूजन करे - पुराना कपड़ा पहने और ब्राह्मण का जूठा खाये १३ अपनी स्त्री १२
से रति करे पराई स्त्री को न देखे - इस प्रकार शूद्र धर्म बताया कर्म से करे १४ पाप करने वाला पाप

शूद्राणामधिकं कुर्य्यादर्चनं न्यायवर्तिनां। धारणं जीर्णवस्त्रस्य विप्रस्योच्छिष्ट
भोजनं १३ स्वदारेषु रतिश्चैव परदारविवर्जनं। दृत्यं कुर्य्यात्सदा शूद्रो मनोवाक्का
यकर्म्मभिः १४ स्थानमैन्द्रमवाप्नोति नष्टपापः सुपुण्यकृत। वर्णेषु धर्म्मा विवि
धाश्च योक्ताश्चैव यथाबलमुखैरिनाशुगाः १५ शृणुध्वमत्राश्रमधर्म्ममाद्यं म
योच्यमानं क्रमशोमुनीद्राः ।६।१६॥ इति हारीते धर्म्मशास्त्रे द्वितीयोध्यायः २

रहते इन्द्र स्थान को प्राप्त होते हैं - हमने वर्ण का अनेक प्रकार का धर्म कहा जो ब्रह्मा ने पहले कहा था १५ हे
मुनीश्वरो अब क्रम से आश्रम का धर्म हम कहते हैं सुनो १६ + + +

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरی ماریت جی کے دھرم شاستر کا تیسرا ادھیاے برُوا کا جنیُو ہو جاے تو گورُو کُل

مین بسے۔ گورُو کے کُل کا ہت منسا یا چاہ کہنا سے کرے ۱ برہم چاری ہو کر پرتھی پر سووے اور اگن کی اُپاسنا کرے۔ گرُو کے

उपनीतो माणवको वसेद्गुरुकुलेषुच । गुरोः कुलेप्रियंकुर्य्यात्कर्म्मणामन
सागिरा १ ब्रह्मचर्य्यमधःशय्यातथावन्हेरुपासना । उदकुम्भान्गुरोर्द
याज्ञोग्रासञ्चैंधनानिच ॥ २॥ कुर्य्यादध्ययनञ्चैवब्रह्मचारीयथाविधि वि
धिंत्यक्त्वाप्रकुर्वाणोनस्वाध्यायफलंलभेत् ॥ ३॥ यःकश्चित्कुरुतेधर्म्म
विधिंहित्वादुरात्मवान् । नतत्फलमवाप्नोतिकुर्वाणोऽपिविधिच्युतः ४

لے پانی کا گھڑا لاوے گُورُو کو گراس دے لکڑی لاوے ۲ برہم چاری بدھ سے بید پڑھے۔ بدھ کو چھوڑ کر جو کرتا ہے سو بید کے

پھل کو نہین پاتا ۳ جو کوئی بدھ کو چھوڑ کر دھرم کو دُشٹ چت سے کرتا ہے۔ سوا وسکے پھل کو نہین پاتا کیونکہ بدھ سے ہین ہو کر کرتا ہے ۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये वेद की वृत्ति को सुधा धिया का आचरन होने के लिये करे - शौच आचार सब गुरु के निकट सीखे ५ मृग छाला और दण्ड और मेखला और जनेऊ - ब्रह्मचारी सदा चारी सदा चारी छोड़कर धारन करे ६ सांझ और सवेरे भिक्षा

तस्मान्नवेदव्रतानीहचरेत्स्वाध्यायसिद्धये । शौचाचारमशेषंतुसिक्षयेद्गुरुसन्निधौ ५ अजिनंदंडकाष्ठंचमेखलाञ्चोपवीतकं । धारयेदप्रमत्तश्चब्रह्मचारीसमाहितः ६ सायंप्रातश्चरेद्भैक्षंभोज्यार्थंसंयतेन्द्रियः । आचम्यप्रयतोनित्यंनकुर्य्यादन्तधावनं ७ छत्रञ्चोपानहञ्चैवगंधमाल्यादिवर्जयेत् । नृत्यगीतमथालापंमैथुनंचविवर्जयेत् ॥ ८ ॥

हो कर खाने के वास्ते भिक्षा लेवे - सदा आचमन कर के शुद्ध रहे दांतों न करे ७ छाता और जूता और गन्ध और माला आदि न रखे - नाच गाना झूंठ बोलना मैथुन का त्याग करे ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथी घोड़े पर न चढ़े ९ ब्रह्मचारी व्रत धारी ब्रह्मचारी सन्ध्या उपासन करे
करने के पीछे गुरु के चरणों को प्रणाम करे १० ऐसे ही माता पिता के भक्त भक्ति प्रणाम करे

हस्त्यश्वारोहणं चैव संत्यजेत्संयतेन्द्रियः। सन्ध्योपास्तिं प्रकुर्वीत ब्रह्म
चारीव्रतस्थितः ९ अभिवाद्यगुरोः पादौ संध्याकर्मावसानतः। तथा
योगं प्रकुर्वीत मातापित्रोश्च भक्तितः १० एतेषुत्रिषुनष्टेषुनष्टाः स्युः सर्वदेव
ताः। एतेषाशासनेतिष्ठेद्ब्रह्मचारी विमत्सरः ११ अधीत्यचगुरोर्वेदान्वे
दौवावेदमेववा। गुरवेदक्षिणांदद्यात्संयमीग्राममावसेत् ॥ १२ ॥

ये तीनों जो नष्ट हो जावें तो सब देवता नष्ट हो जावें - बड़ाई छोड़कर ब्रह्मचारी उनकी आज्ञा में रहे ११
गुरु से चारों वेद या दो वेद या एक वेद पढ़े - गुरु को दक्षिणा देके ब्रह्मचारी गृहाश्रम में आवे १२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जسکی جیبھہ اور لنگ اور اُدر اور ہاتھہ گپت رہے ۔ وہ برہم چاری براہمن سنیاس سمے کو کرے ۱۳ اسی
پرکار جب تک جس گرو کے یہان سمے بتاوے ۔ اوسکے مرنے پر اوسکے پُتر یا سکھہ یا اوسکے کُل مین رہے ۱۴

यस्यैतानि सुगुप्तानि जिह्वोपस्थोदरंकरः । सन्यासस्समयं कृत्वा ब्राह्म
णोब्रह्मचर्य्यया १३ तस्मिन्नेवनयेत्कालमाचार्य्ये यावदायुषं । तदभावे
चतत्पुत्रेतच्छिष्येवाथवाकुले १४ नविवाहेनसंन्यासोनैष्ठिकस्येविधी
यते । इमंयोविधिमास्थायत्यजेद्देहमतन्द्रितः १५ नेहभूयोपिजायेत्त्व
ह्मचारीदृढव्रतः । योब्रह्मचारीविधिनासमाहितश्चरेत्सृथिव्यांगुरुसेवनेरतः १६

نیشٹک کے لئے بیواہ اور سنیاس کی بدھ نہین ہے ۔ یہ بدھ نراس ہوکر رکھے اور دیہہ کو تیاگ کرے ۱۵
یہان پھر دیہہ برت والا برہم چاری جنم نہین لیتا ۔ جو برہم چاری جیندری بدھ سے گرو کی سیوا مین رت رہتی پرتھی پر گھومتا ہے ۱۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बड़ी दूर तक जाने वाली बंदूक के छर्रे को पाये हुए है ॥ १७ ॥ हारीत जी के धर्म शास्त्र का चौथा अध्याय ॥ वेद को पढ़कर और शास्त्र के तत्त्व को जानकर आसान रखने वाली कन्या जिसके भाई न हो

संप्राप्य विद्यामतिदुर्लभांयोवांछितांफलञ्चतस्याःसुतमंतुविन्दति ।१७।
इतिहारीतेधर्मशास्त्रेतृतीयोध्यायः ॥३॥ गृहीतवेदाध्ययनःश्रुतिशास्त्रार्थ
तत्ववित् । असमानर्षिगोत्रांहिकन्यांसभ्रातृकांशुभां १ सर्वावयवसंपू
र्णांसुवृत्तामुद्वहेन्नरः । ब्राह्मणविधिनाकुर्य्यात्प्रशस्तेनद्विजोत्तमः २ तंयाग्ने
यहवःप्रोक्ताविवाहाद्वर्णधर्मतः । उपासनंचविधिवदाहृत्यद्विजपुङ्गवाः ३ सायंप्रात
र्जुहुयात्सर्वकालमतन्द्रितः । स्नानंकार्य्यंततोनित्यंदंतधावनपूर्वकं ॥ ४ ॥

और सुंदर हो अब अंग से संपूर्ण हो सुव्रत हो उस से ब्याह किया करे । ब्राह्मण विधि से ब्याह किया करे कि जो द्विजों के लिये उत्तम है २ ऐसी ही और ब्याह वर्ण धर्म के भेद से कहा है । सो ही ब्राह्मणों में विशेष करके ब्याह करना ३ संध्या और सवेरे होम करना सब काल में आलस्य रहित ४ दातौन करके स्नान करे ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اوکھا کال مین اوٹھ کر جتھا بدھ شوچ کرے - مکھ کے باسی ہو جانے سے منکھ بت اسدھ ہو جاتا ہے ۵ اسلئے
سوکھی داتیلی دتون کرے - کنجا اور کھیر اور کدم اور کریا ایسے ہی ۶ سپت پرن اور کیتھا اور جامن اور نیم

ऊषःकालेसमुत्थायकृतशौचोयथाविधि । मुखेपर्य्युषितेनित्यंभवत्यप
यतोनरः ५ तस्माच्छुष्कमथार्द्रंवाभक्षयेद्दन्तकाष्टकं । करञ्जंखादिरंवा
पिकदम्बंकुरबंतथा ॥६॥ सप्तपर्णंप्लक्षिपर्णीजम्बूनिम्बंतथवैच ।
अपामार्गंचविल्वञ्चार्कञ्चोदुम्बरमेवच ॥ ७ ॥ एतेप्रशस्ताःकथिता
दन्तधावनकर्म्मणि । दन्तकाष्ठस्यभक्षश्चसभासेनप्रकीर्तितः ॥ ८ ॥

اور لٹ جیرا اور بیل اور مدار اور گولر ۷ اتنی دتون اتم کہی گئی ہین - دتون کرنے کو ہمنے سنچھیپ سے
کہا ہے ۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्ण कांटने वाली और दूध वाली पीपल और जंबीर देने वाली है - आठ अंगुल की लंबी दतौन कहते हैं ९ अंगूठा बाईस भर की ले कर दांत धोवे - हे उत्तम द्विज लोगो परिवा और पर्व और छठ और नवमी १० को जो काष्ठ

सर्वे कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणश्चयशस्विनः । अष्टाङ्गुलेन मानेन दन्त
काष्ठमिहोच्यते ९ प्रादेशमात्रमथवा तेनदन्तान्विशोधयेत् । प्रतिपदष
र्वषष्ठीषुनवम्याञ्चैव सप्तमाः १० दंतानांकाष्ठसंयोगाद्दहत्यासप्तमंकुलं ।
अभावेदन्तकाष्ठानांप्रतिषिद्धदिनेषुच ११ अपांद्वादशगण्डूषैर्मुखशु
द्धिंसमाचरेत् । स्नात्वामंत्रवदाचम्यपुनराचमनं चरेत् ॥ १२ ॥ १२ ॥

से दांत का संजोग करे तो सात कुल भस्म होते हैं - जब दतौन न होवे तो जिस दिन दतौन करे उस दिन ११ पानी के बारह कुल्ले से मुख शुद्ध करे - स्नान करके मंत्र से आचमन करे और फिर आचमन करे १२ * १२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रवत्प्रोक्षचात्मानंप्रक्षियेदुदकाञ्जलिं । आदित्येनसहप्रातर्मन्दे हा
नामराक्षसाः १३ युद्धन्तिवरदानेनब्रह्मणोव्यक्तजन्मनः । उदकाञ्जलि
निःक्षेपागायत्र्याचाभिमंत्रितः १४ निघ्नन्तिराक्षसानसर्वान्मन्देहास्या
न्द्विजेरिताः । ततःप्रयातिसविताब्राह्मणैरभिरक्षितः १५ मारीच्याद्यैर्म
हाभागैःसनकाद्यैश्चयोगिभिः । तस्मान्नलंघयेत्संध्यांसायंप्रातःसमाहितः १६

परिपूर्ण सब राक्षस मन्दिया नाम को मारती है - तब सूरज ब्राह्मणों से रक्षित चलते हैं १५ जैसे मारीच आदि महाभाग सनकादि योगियों से रक्षित चलते हैं इसलिये संध्या सायं प्रातः समाहित १६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2216
120
37622

जो मुंह से उंगली कहते हैं वह नरक में जाते हैं - सांझ को मंत्र पढ़कर आचमन करे और अपने ऊपर जल छिड़के और सूर्य को अंजली
१७ दे कर परदक्षिणा करे और जल को बाहर फेंक दे तो शुद्ध हो - पहली संध्या छिपते रहे करे १८ जब तक सूर्य

उल्लंघयति योमोहात्सयातिनरकंध्रुवम् । सायंमंत्रवदाचम्यप्रोक्ष्यस्
र्य्यस्यचाञ्जलिं १७ दत्वाप्रदक्षिणंकुर्य्याञ्जलंस्पृष्ट्वाविशुद्ध्यति । पूर्व्वांस
न्ध्यांसनक्षत्रामुपासीतयथाविधि १८ गायत्रीमभ्यसेतावत्यावदादित्यं द
र्शनात् । उपास्यपश्चिमांसंध्यांसादित्याञ्चयथाविधि १९ गायत्रीमभ्यसे
तावद्यावन्नारा नपश्यति । ततश्चावसथंप्राप्यकृत्वाहोमंस्वयंबुधः । २० ।

का दर्शन हो गायत्री का अभ्यास करे - पिछली संध्या सूर्य रहते करे १९ और गायत्री का अभ्यास
करे जब तक तारे न दीखने पड़ें - फिर घर में जाकर हवन करे २० + २० + २० + २० + २० +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा.स्मृ
२२

और कुटुम्ब के पालने के लिये चिंता करे - फिर सिद्धि के हेतु के लिये थोड़ा वेद पढ़े २१ कार्य के लिये ब्राह्मण
राजा के पास जावे - कुश फूल लकड़ी दूर जाकर लावे २२ तिस पीछे अच्छी जगह में दोपहर का कर्म करे - उसकी

४४

सञ्चिन्त्यपोष्यवर्गस्यभरणार्थंविचक्षणः । ततःशिष्यहितार्थीयस्वाध्यायं
किञ्चिदाचरेत् २१ ईश्वरञ्चैवकार्य्यार्थमभिगच्छेद्द्विजोत्तमः । कुशपुष्पेन्ध
नादीनिगत्वादूरंसमाहरेत् २२ ततोमध्यान्हिकंकुर्य्याच्छुचौदेशेमनोरमे
। विधिंतस्यंप्रवक्ष्यामिसमासात्पापनाशनं २३ स्नात्वायेनविधानेन
मुच्यतेसर्वकिल्विषात् । स्नानार्थंमृदमानीयशुद्धाक्षततिलैःसह २४

अ.
४

बड़े पाप की नाश करने वाली हम संक्षेप से कहते हैं २३ जिस प्रकार स्नान करने से
सब पाप छूट जावें - स्नान के लिये मट्टी और शुद्ध अक्षत और तिल साथ लेवे २४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्मन होकर जिस नदी मین आदिक जल हो वहان جاے - جب تک ندی ملے اور جل مین اسنان
نہ کرنے ۲۵ اور جب تک بہت جل والی ملے تھوڑے جل مین اسنان نہ کرے - ندیون مین بڑی ندی

सुमनाश्चततोगच्छेन्नदींशुद्धजलाधिकां । नद्यांतुविद्यमानायांनस्नाया
दन्यवारिणि २५ नस्नायादल्पतोयेषुविद्यमानेबहूदके । सरिद्वरेनदीस्ना
नंप्रतिस्रोतःस्थितश्चरेत् २६ तडागादिषुतोयेषुस्नायाच्चतदभावतः । शु
चिदेशंसमम्भुंस्यास्थापयेत्सकलाम्बरम् २७ मृत्तोयेनस्वकंदेहंलिम्पेत
प्रक्षाल्ययत्नतः । स्नानादिकञ्चसंप्राप्यकुर्य्यादाचमनंबुधः ॥ २८ ॥

मین اور دھارا کے سنمکھ ہو کر اسنان کرے ۲۶ اوسکے نہونے پر تالاب آدِ جل مین اسنان کرے - پہلے ستھان پر جل چھڑک ۲۷
کر سب کپڑے کو رکھدے ۲۷ مٹی اور جل دیہہ مین مل کر جتن سے پوچھے - اسنان آدِ کر کے آچمن کرے ۲۸ + ۲۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ پھر چپ ہو کر نیم کر کے جل مین پروس کر - من سے ہر کو اسمرن کرے جانگھ بھر جل مین اسنان کرے
۳۰ پھر تیر نکل کر منتر سہت جل سے آچمن کرے - برن کے منتر سے اور پاومانی رچا سے بھی چھڑکے

सोऽन्तर्जलंप्रविश्याद्यवाग्यतोनियमेनहि। हरिंसंस्मृत्यमनसामज्जयेच्चोरमज्जले २९ ततस्तीरंसमासाद्यशुचौम्यायःसमंचतः। प्रोक्षयेद्वाग्भवेमंत्रैःपावमानीभिरेवच ॥ ३० ॥ कुशाग्रकृततोयेनप्रोक्ष्यात्मानंप्रयत्नतः स्योनापृथिवीतिमृद्गात्रेहृदंविस्फुरितिद्विजाः ३१ ततोनारायणंदेवंसंस्मरेत्प्रतिमज्जनं। निमज्ज्यान्तर्जलेसम्यक्क्रियतेचाघमर्षणं ॥ ३२ ॥

کشا گر سے جل لے کر جتن سے دیہہ پر چھڑکے - سیونا پرتھوی منتر سے اور اوانگ بشن منتر سے دوج دیہہ مین
۳۱ مٹی لگاوے پھر نارائن دیو کا پر ایک اسنان مین اسمرن کرے - اسنان کر کے جل کے بھیتر

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार स्नान करके नवीन उत्तम वस्त्र धारण करके यज्ञोपवीत धारण करे और शुद्ध ३३
जल के तीर आकर उत्तम जल से दो बार आचमन करे - पहने और कांधे पर रक्खे बाल न छिपके ३४ फिर लाल और नीला २५

स्नात्वाक्षततिलैस्तद्देवर्षिपितृभिः सह । तर्पयित्वांजलंतस्मान्निष्प्री
अचसमाहितः ३३ जलतीरंसमासाद्यतत्रशुक्लेचवाससी । परिधायोत्त
रीयञ्चकुर्य्यात्केशान्नधूनयेत् ३४ नरक्तमूल्बणंवासोनीलञ्चमृग
स्यते । मलाक्तंमद्यगन्धीनञ्चवर्जयेदम्बरंबुधः ३५ ततःप्रक्षालयेत्पा
दौमृतोयेनविचक्षणः । दक्षिणन्तुकरंकृत्वागोकर्णाकृतिवत्पुनः ।३६।

आचमन करे - मैला कपड़ा जिसमें सुगन्ध नहो पहने ३५ मट्टी और जल से पांव धोवे
और दाहिने हाथ को गऊ के कान के आकार करके ३६ ३७ ३८ ३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन بار جل دیکھ کر پیئے اور دو بار مکھ دھووے - پانو اور سر پر چھڑک کر تین بار آچمن کرے ۳۷ انگوٹھا
اور اناملکا سے آنکھ چھوے - اسی پرکار سمپنّ ہوکر پانچو انگلیون سے سر کو چھوے ۳۸ اس بدھ سے

त्रिःपिबेदीक्षितंतोयमास्यंद्विःपरिमार्जयेत् । पादौशिरस्तथोभ्युक्ष्य त्रि
र्नाभिमुखस्पृशेत् ३७ मङ्गुष्ठानाभिकाभ्याञ्चचक्षुषीसमुपस्पृशेत् । तथै
वपञ्चभिर्मूर्द्धिस्पृशेद्देवंसमाहितः ३८ एनेनविधिनाचम्यब्राह्मणःशुद्ध
मानसः । कुर्वीतदर्भपाणिस्तूदङ्मुखःप्राङ्मुखोपिवा ३९ प्राणायाम
त्रयंधीमान्यथान्यायमतन्द्रितः । जपेद्यजंतंतःकुर्य्याद्गायत्रींवेदमातरं ४०

آچمن کرے تو براہمن کا من شدھ ہو جاوے - کس ہاتھ مین لے کر اوتر مونہہ یا پورب مونہہ کرے ۳۹
تین بار پرانایام نرالس ہوکر جتھا اچت کرے - پھر گایتری بید ماتا کی جاپ جپ کرے ۴۰

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जप जگ تین پرکار کا ہے اوسکا نشچے جانو - باچک اور اُپانش اور مانس یہ تین پرکار ہیں ۴۱ ۲۷
تینوں جگیوں میں پچھلے سے پچھلا اُتم ہے - جو اونچ نیچ اُچارن کے شبد اُسپرشٹ پدا اچھر کو لئے ۴۲

विविधोजपयज्ञः स्यात्तस्यतत्वंनिबोधत । वाचिकश्चउपांशुश्चमानसश्च
त्रिधाकृतिः ४१ त्रयाणामपियज्ञानांश्रेष्ठः स्यादुत्तरोत्तरः । यंदुच्चनीचैः
रितैःशब्दैःस्पष्टपदाक्षरैः ४२ मंत्रमुच्चारयन्वाचाजपयज्ञस्तुवाचिकः
। शनैरुच्चारयन्मंत्रकिञ्चिच्छ्रोष्ठौप्रचालयेत् ४३ किञ्चिच्छ्रवणयोग्यः
स्यात्सउपांशुर्जपःस्मृतः । धियापदार्थश्रेणीयानवर्णमपदाक्षरं ॥४४॥

मنتر کو بچن سے اُچارن کرے وہ باچک جپ جگ ہے - دھیرے منتر اُچارن کرے اور کچھ اونٹھ کو ہلاوے ۴۳ کچھ سُنے جوگ ہو وہ اُپانش جپ جگ ہے - بُدھ سے اچھر کی پنگت بناون بناوے کے اچھر ۴۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दार्थ की चिंता के लिये जो उच्चारण करे उसको मानस कहते हैं - इन्द्र जब से अस्त किये गये दो तापर्यन्त ४४
होते हैं ४५ प्रसन्न होने से ज्ञानी मनुष्य का गौरव बढ़ता है - राक्षस और पिशाच और महासर्प भयानक ४६
डराने वाले

शब्दार्थं चिंतनाभ्यां तु तदुक्तमानसं स्मृतम । जपेन देवतासिद्धिर्मंत्रस्तुत्या
मानाप्रसीदति ४४ प्रसन्ने विपुलान् गोचान् प्राप्नुवन्ति मनीषिणः । राक्ष
साश्चपिशाश्चमहासर्पाश्चभीषणाः ४६ जपितान्नोपसर्पन्ति दूरादेवप्रया
न्ति ते । छन्दऋष्यादिविज्ञायजपेन्मंत्रमतंद्रितः ४७ जपेदहरहर्ज्ञात्वा गा
यत्रीमनसाद्विजः । सहस्रपरमांदेवींशतमध्यांदशावरां ॥ ४८ ॥ ४८ ॥

जपने वाले के पास नहीं जाते हैं दूर से चले जाते हैं - छन्द और ऋषि आदि को जानकर प्रयत्न होकर मन्त्र को जपे ४७ दिन ४७
दिन गायत्री को जान कर इस से दूज जपे - एक हजार एक सौ दस ४८ ÷ ४८ ÷ ४८ ÷

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो नित्य गायत्री को जपता है वह पाप में लिप्त नहीं होता - अब सूर्य को पुष्पांजलि दे कर और दोनों बाहु ऊपर ४१
उठा कर तीन बार ओंकार का उच्चारण करे जो मुक्ति का देने वाला है उसको जपे - फिर कर जोड़ कर सूर्य को नमस्कार करे ५० और कहे

गायत्र्यायोजपेन्नित्यंसनपापेनलिप्यते । अथपुष्पाञ्जलिंदत्वाभान
वेचोद्वाहुकः ४९ उदुत्यञ्चजगत्येत्सूक्तंचक्षुरितिचापरं । मदंहिणंसुपा
वृत्यनमस्कुर्य्यादिवाकरं ५० ततस्तीर्थेनदेवादीनद्भिःसन्तर्पयेद्विजः।स्मा
नवस्त्रन्तुनिर्ष्पीड्यपुनराचमनंचरेत् । ५१ । तद्वद्भक्तजनस्नेहस्नानंदा
नंप्रकीर्तितं । दर्भासीनोदर्भपाणिर्ब्रह्मयज्ञविधानतः ॥ ५२ ॥ ५२ ॥

पीछे तीर्थ के जल से देवता आदि को तर्पण करे । स्नान के कपड़े को निचोड़ कर पहर आचमन करे ५१ इस प्रकार ४२
भक्त जन का स्नान दान कहा गया है - कुश पर बैठ कर कुश हाथ में ले कर ब्रह्म यज्ञ करे ५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा.सू. २०

पूर्वमुखे बैठकर सर्व दिशाओं से ब्रह्म जप करे। तब सूर्य को तिल और घृत और अक्षत मिलाकर अर्घ्य देवे ५३
फिर कुछ जल लेकर मन्त्र पढ़कर शिखा में छिड़के। देवों को नमस्कार करके घर में जावे ५४ फिर भोजन की

प्राङ्मुखो ब्रह्मयज्ञंतु कुर्य्याच्छ्रद्धासमन्वितः। ततो ऽग्नौ मानवेदेवांस्तिस्र
पुष्पाञ्जलीन्क्षिपेत् ५२ इत्यायमूर्द्धपर्य्यन्तं हंसः शुचिषदित्यृचा। ततोदेवान्
मस्कृत्य गृहंगच्छेत्ततः पुनः ५३ विधिनापुरुषसूक्तस्यगत्वांघ्रिमुसमर्च
येत्। वैश्वदेवंततः कुर्य्याद्बलिकर्मविधानतः ५४ गोदोहमात्रमात्रार्थे
दतिथिंप्रतिवैगृही। महद्दृष्टपूर्वमज्ञातमतिथिंप्राममर्च्चयेत् ॥५५॥५६॥

मं. ५

बड़े प्रेम से भोजन की पूजन करे। तब बैश्वदेव और बलिकर्म विधि से करे ५५ जितनी देर में गौ दुही जाती
है उतनी देर गृहस्थ अतिथि को विचारे। जिसको कभी न देखा हो और आये हुए अतिथि का पूजन करे ५६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व ३१

पूर्व के ऊपर होता है ५७ आसन दान से इंद्र प्रसन्न होते हैं - इन दोनों से पितृ दुर्लभ परितोष होता है

स्वागतासनदानेनाभ्युत्थानेनचाम्बुना। स्वागतेनाभ्ययस्तुष्टाभवंति गृहमेधिनः ५७ आसनेनतुदत्तेनप्रीतोभवतिदेवराट्। पादशौचेनपितरः प्रीतिमायांत्यनिदुर्लभां ५८ अन्नदानेनयुक्तेनतृप्यतेह्यग्रजापतिः। तस्मादतिथयेकार्य्यंपूजनंगृहमेधिना ५९ भक्त्याचशक्तितोनित्यंदिवोर्ध्वोदनन्तरं। भिक्षाञ्चभिक्षवेदद्यात्परिव्राड्ब्रह्मचारिणे ॥ ६० ॥

हुए हैं ५८ अन्न देने से प्रजापति तृप्त होते हैं - इसलिये अतिथियों का पूजन गृहस्थ करे ५९ भक्ति से और शक्ति से नित्य दिवा के ऊपर से और रात्रि के पहले भिक्षुक को भिक्षा देवे परिव्राजक ब्रह्मचारी को देवे ६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बे सकेत की हवा न निकाल कर बिना बैश्वदेव के भिक्षारी घर में आवे ५१ बैश्वदेव के लिये निकाल कर बिना दिये कर बिदा करे - बैश्वदेव करने के पाप को दूर करने में भिक्षारी समर्थ है ५२ भिक्षारी

संकल्पितान्नादुद्धृत्य सव्यञ्जनसमन्वितां। शकृतेवैश्वदेवेपि भिक्षोचग्
हमागते ६१ उद्धृत्यवैश्वदेवार्थंभिक्षांदत्वाविसर्जयेत। वैश्वदेवाकृता
न्दोषान्छक्तोभिक्षुर्व्यपोहतुं ६२ नहिभिक्षुकृतान्दोषान वैश्वदेवोव्यपोह
ति। तस्मात्प्रायत्नयेभिक्षांदद्यात्समाहितः ६३ विस्मृत्वयत्किञ्चि
यदतिनिश्चित्यभावयेत। सुवासिनींकुमारीञ्चभोजयित्वानरानपि ॥ ६४ ॥

को न देने के पाप को बैश्वदेव दूर नहीं कर सकता है - इसलिये आये हुये भिक्षुक को यथोचित भोजन देकर बिदा करे ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ जिस को बिना भोजन दिये कभी न जाने दे - अच्छे बस्तु वाली कन्या और सुहागिन को भोजन करा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल اور بڑّدھ سے جو باقی رہے اوسکو گرہستھ آپ بھوجن کرے - پُورب مونہہ اور اُتّر مونہہ مَون ہوکر تھوڑا بولے
६५ پہلے اَنّ کو انترآتما کی خوشی سے نمسکار کرے - اسطرح منتر سے بھَن بھَن پرانا ہُت کرے ६६ تب بیٹھا

३३

बालवृद्धांस्ततःशेषंस्वयंभुञ्जीतवाग्यतः । प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापिमौनी
चमितभाषकः ६५ अन्नमादौनमस्कृत्यप्रहृष्टेनान्तरात्मना । एवंप्राण
हुतिंकुर्य्यान्मन्त्रेणचपृथक्पृथक् ६६ ततःस्वादुकरान्नंचभुञ्जीतसुसमा
हितः । आचम्यदेवतामिष्टांसंस्मरन्नुदरंस्पृशेत् ६७ इतिहासपुराणाभ्यांक
ञ्चित्कालंनयेद्बुधः । ततःसंध्यामुपासीतबहिर्गत्वाविधानतः ॥ ६८ ॥

अ. ४

اَنّ سنجت ہوکر بھوجن کرے - آچمن کر اشٹ دیو کو دھیان کر کے پیٹ کو چھوے ६७ اِتہاس اور پُران
سے کچھ کال بتا وے - تب باہر جاکر بدھ نے سندھیا کی اُپاسنا کرے ६८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होम करके रात मे अतिथि को भोजन करा के आप भोजन करे । सायंकाल और सवेरे दो जात के लिये
भोजन वेद मे कहा है ६९ बीच मे भोजन करे अग्निहोत्र के समान विधि है । वेदपाठियों को पढ़ावे अन्य

कृतहोमस्तुभुञ्जीतरात्रौचातिथिभोजनं । सायंप्रातर्द्विजातीनामशनंश्रु
तिचोदितं ६९ नान्तराभोजनंकुर्य्यादग्निहोत्रसमोविधिः । शिष्यान
ध्याययेच्चापिश्रुतध्यायेविसर्जयेत ७० स्मृत्युक्तानखिलांश्चापिपुराणोक्त
नपिद्विजः । महानवम्यांद्वादश्यांभरण्यामपिपर्व्वसु ७१ तथाक्षयतृतीयां
शिष्यान्नाध्यापयेद्विजः । माघमासेतुसप्तम्यांरथाख्यायांतुवर्जयेत ७२

मे बताकर दूसरे ७० स्मृति और पुरान मे यों कहा है कि ब्राह्मण - महानवमी भरनी द्वादशी पर्व मे । ७१
इसी प्रकार अक्षय तृतीया मे शिष्यों को न पढ़ावे - माघ महीने मे रथाख्या सप्तमी को न पढ़ावे ७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबटन लगाते और स्नान करते हुये न पढ़ावे - हे उत्तम द्विजो मृदा लेजाते हुये और भूमि में पड़ा हुआ
देखकर ७३ और रोते हुये शूद्र और सांझ के समय न पढ़े - हे उत्तम द्विजो गृहस्थ को दान दे ७४ सोना और भूमि और गौ

अध्यापनं समभ्यञ्जनस्नानकाले च वर्जयेत् । नीयमानं शवं ग्रामाद्ग्रामस्थं वा
द्विजोत्तमाः ७३ नर्दतं दुदितं श्रुत्वा संध्यायान्तु द्विजोत्तमाः । दानानि चै
प्रदेयानि गृहस्थेन द्विजोत्तमाः ७४ हिरण्यदानं गोदानं पृथिवीदानमेव च
एवं धर्म्मो गृहस्थस्य सारभूत उदाहृतः ७५ यएवं श्रद्दधा कुर्य्यात्स या
ति ब्रह्मणः पदं । ज्ञानोत्कर्षश्च तस्यस्यान्नारसिंह प्रसादतः ॥ ७६ ॥

दे - इस प्रकार से गृहस्थ का धर्म्म कहा आगे ७५ जो इस प्रकार से श्रद्धा के लिये करेगा
वह ब्रह्म पद को प्राप्त है - और नृसिंह के प्रताप से उसको ज्ञान होगा ७६ ÷

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस से हे उत्तम दुर्जो ब्राह्मण मोक्ष को प्राप्त है। हे ब्राह्मणो इस प्रकार से ऋत धर्म सुनकर आप लोगों ने क्या कहा ७७
सत गृहस्थ का धर्म जतन से करने वाला गृहस्थ मोक्ष को प्राप्त है ७८ - चौथा अध्याय समाप्त हुआ

तस्मान्मुक्तिमवाप्नोति ब्राह्मणो द्विजसत्तमाः। एवं हि विप्राः कथितो मया
पावः समासतः शाश्वतधर्मराशिः ७७ गृहीगृहस्थस्यसतो हि धर्मं कुर्व
न्प्रयत्नाद्धरिमेति युक्तम् ७८ इति हारीतेधर्मशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ४ अतः प
रं प्रवक्ष्यामि वानप्रस्थस्यसत्तमाः। धर्मान्त्रमं महाभागाः कथ्यमानं निबोधत १ गृह
स्थः पुत्रपौत्रादीन्दृष्ट्वा पलितमात्मनः। भार्यां पुत्रेषु निःक्षिप्य सह वाप्यविशेद्वनम् २।

इसके आगे वानप्रस्थ के लिये हे उत्तम लोगो हम कहते हैं। हे महाभागो आश्रम का धर्म कहा हुआ सो सुनो १ गृहस्थ
बेटा और पोता आदि और आप को देखकर। स्त्री को पुत्र के सुपुर्द करके या साथ ले कर वन में जावे २ +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नखे और बाल और अजली सर पर चर्म आदिक - धारन किये बन मे रह के बाद हो यक अग्न मे होम करे ३ धान
से और मीखे से अन्न जो नदी अरहट तीनी आदि से - और साग और मूल फल से जतन पूर्वक नित्त करी ४

वल्कलेमाणि चतथासितगात्वगादिच । धारयन्जुहुयादग्निंवनस्थोवि
धिमाश्रितः २ धान्यश्यनसंभृतैर्नीवाराद्यैरनिन्दितैः । शाकमूलफ
लैर्वापिकुर्य्यान्नित्यंप्रयत्नतः ४ त्रिकालस्नानयुक्तस्तुकुर्य्यात्तीव्रंतपस्त
दा । पक्षान्तेवासमश्नीयान्मासान्तेवास्वपक्वभुक ५ तथाचतुर्थकाले
तुभुञ्जीयादष्टमेऽथवा । षष्टेचकालेऽप्यथवावायुभक्षोऽथवाभवेत् ६

त्रिकाल स्नान करे अगर तप करे - छाल बल्कल और मृगछाला आप पछाड़ कर भोजन करे ५ इसी प्रकार से चौथे
काल मे और आठवें मे भोजन करे - और छठवें काल मे अथवा बायु भोजन करे ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्मियम रुत मین पنچ اگن مین رہے اوسی پرکار سے برکھا مین برہا دھار رہے - ہیمنت مین جل مین رہے تپ کرکے
کال کو بتاوے ۷ اس پرکار سے کرم جو کرتا ہے وہ سدھ بدھ والا ہی - اگن کو اپنے سریر مین کر اتر دسا کو چلا جاے

धर्मेपञ्चाग्निमध्यस्थस्तथावर्षेनिराश्रयः । हेमन्तेचजलेस्थित्वानये
त्कालंतपश्चरन् ७ एवञ्चकुर्वतायेनकृतबुद्धियथाक्रमम् । अग्निंस्वा
त्मनिकृत्वातुप्रव्रजेदुत्तरादिशं ८ आदेहपातंवनगोमौनमास्थायतापस
सः । स्मरन्नतीन्द्रियंब्रह्मब्रह्मलोकमहीपते ९ तपोह्यियःसेवतिवन्यवासःसमा
धियुक्तःप्रयतान्तरात्मा।विमुक्तपापोविमलःप्रशान्तःसयातिदिव्यंपुरुषंपुराणं ॥ १० ॥

८ سریر کے ناس ہونے تک بن مین مون ہوکر رہ کر تپسیا کرے - اندری سے پرے برہم کا دھیان کرنیوالا برہم لوک مین پوجت ہے ۹ بن مین رہکر دھیان کرتا ہوا سدھ آتما ہوکر جو تپ کرتا ہے - پاپ سے رہت اور مل اور اندری جیت ہوکر پرکھ کو پراپت ہی ۱۰

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचवां अध्याय समाप्त हुआ इस से आगे छटा चौथा आश्रम कहते हैं - सर्व कर्मों से जो करे तो ३७
बंधन से मुक्त हो जावे १ - इस प्रकार से चौथा आश्रम में रह कर पाप का नाश कर - चौथा आश्रम का संन्यास विधि से ग्रहण करे २

इतिहारीतेधर्मशास्त्रेपंचमोध्यायः ५ अतःपरंप्रवक्ष्यामिचतुर्थाश्रममुत्तमं। अद्
यातदनुष्ठायतिष्ठन्मुच्यतबन्धनात् १ एवंवनाश्रमेतिष्ठन्पातयंश्चैवकिल्बिषं।
चतुर्थमाश्रमंगच्छेत्संन्यासबिधिनाद्विजः २ दत्वापितृभ्योदेवेभ्योमानुषेभ्यश्चय
ज्ञतः। दत्वाश्राद्धंपितृभ्यश्चमानुषेभ्यस्तथात्मनः ३ इष्टिंवैश्वानरींकृत्वा
प्राङ्मुखोदक्शिरोपिवा। अग्निंस्वात्मनिसंरोप्यमंत्रवित्प्रव्रजेत्पुनः ॥ ४ ॥

पितर और देवता और मनुष्य को जल से दे कर - पितरों की और मनुष्यों की श्राद्ध कर के इसी प्रकार से अपने लिये ३ अ. ३
जैसा अग्नि जैसे पूर्व मुख और उत्तर मुख हो कर करे - अपनी देह में अग्नि जठराग्नि स्थापन कर संन्यास को लेवे ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब पुत्र आदि के लिये मुण्डा रखा आदि छोड़ दे - मुण्डन और सब लोगों को न्यौते करके ५ पुरोहित और नाई का कर्तव्य गोल - जिसमें चारों अङ्गुल गुच्छे के बाल बीचों बीच रहें ६ शौच और नाई के लिये जो लोगों ने किया है

तत: प्रभृति पुत्रादौ स्नेहापोहं विवर्जयेत् । बन्धूनामभयं दद्यात् सर्वभूता
भयं तथा ५ त्रिदण्डवेणुवंशाग्र सन्ततं समपर्वकं । वेष्टितं कृष्णगावा
लरज्जुमच्छुरङ्गलम् ॥ ६ ॥ शौचार्थं मानसार्थं च मुनिभि: समुदाहृतं
कौपीनाच्छादनं वास: कन्थां सीतनिवारिणीं ७ पादुके चापि एतेषां
कुर्यान्नान्यस्य संग्रहं । एतानि तस्य लिङ्गानि नियतेरुक्तानि सर्वदा ॥ ८ ॥

कौपीन के लिये कपड़ा और जाड़ा दूर करने को गुदड़ी ७ और खड़ाऊं लेवे और संग्रह न करे

+ + + + + + + + + ८ तिस यति के लिये इतने चिह्न कहे गये हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सङ्गरह कर और सन्यास कर के तुम तीर्थ मेन जाकर - स्नान कर कपड़ा से छाने हुये जल से बद्ध पूर्वक आचमन कर के ९ और देवताओं को तर्पण कर मन्त्र पढ़ के सूर्य को नमस्कार करे - आप पूर्व मुख हो कर चुप होकर प्राणायाम करे ९

संगृह्य कृतसंन्यासो गत्वा तीर्थमनुत्तमं । स्नात्वाचम्य च विधिवद्वस्त्रपूते
नवारिणा ९ तर्पयित्वा तु देवांश्च मन्त्रवज्जास्करं नमत् । स्मात्मनः प्राङ्मु
खोमौनी प्राणायाम त्रयं चरेत् १० गायत्रीञ्च यथाशक्ति जप्त्वा ध्यायेन्परंप
दं । स्थित्यर्थं स्वात्मनो नित्यमिक्षाटनमथाचरेत् ११ सायंकाले तु विप्रा
णां गृहाण्यभ्यवपद्यतु । सम्यक् याचेच्च कवलं दक्षिणेन करेण वै ॥ १२ ॥

सावधान होकर गायत्री का जाप करके परम पद का ध्यान करने - अपने शरीर के लिये नित्य भिक्षा मांगे ११ सांझ
+ + + + + + + १२ समय ब्राह्मण के घर जावे - अच्छी तरह से दहने हाथ से कौर मांगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांयें हाथमें पात्र लिये रहे दाहना खाली रहे - जितने अन्न से तृप्ति हो उतनी भिक्षा मांगे १२ जब पात्र पलट कर अन्नसे तृप्ति (दूसरा पात्र) रखकर जीमेगी - चार अंगुल में ढंपा हुआ अन्न तृप्तिकारक होकर १३ सब प्रकारसे भक्षण दूसरे

पात्रं वामकरे स्थाप्य दक्षिणेनतुशेषयेत् । यावतान्नेन तृप्तिः स्यात्तावद्भैक्षं समाचरेत् १३ ततोनिवृत्यततपात्रं संस्थाप्यान्यत्र संयमी । चतुर्भिरङ्गुलैश्छाद्यग्रासमात्रंसमाहितः १४ सर्व्वव्यञ्जनसंयुक्तंपृथक्पात्रेनियोजयेत् । सूर्य्यादिभूतदेवेभ्योदत्वा संप्राश्यवारिणा १५ भुञ्जीतपात्रपुटकेपात्रेवावम्यतोयतिः । वटकाश्वत्थपर्णेषुकुम्मीतेन्दुकपात्रके ॥ १६ ॥

पात्रमें रखदे - सूरज आदिक भूतदेवताओंको भोजन देकर जल से आचमन कर १५ पात्रपुटक में और पात्रमें जोगी मौन होकर भोजन करे - और बर, पीपल और कुंभ पर्छ और नीमके पात्रमें १६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اور کچنار اور کدم کے پاتر مین کبھی نہ بھوجن کرے - کانسے مین بھوجن کرنے والے کو جو گی سب مل جگت کہتے ہین ۱۵ کانسے کے برتن مین پکایا جاے اور اوسمین گر ہستھ بھوجن کرے اوسی طرح جتی بھی بھوجن کرے تو دونون کو سرپس پاپ ۱۶ ۴۳

कोविदारकदम्बेषुनभुञ्जीयात्कदाचन । मलाक्ताः सर्व्वउच्यन्तेयतयःकांस्यभोजिनः १७ कांस्यभाण्डेषुयत्पापंकोगृहस्थस्यतथैवच । कांस्यभोजयतः सर्व्वंकिल्विषंप्रामुयात्तयोः १८ भुक्तापात्रेयतिर्नित्यंक्षालयेन्मन्त्रपूर्वकम् । नदुष्यतेचततपात्रंयज्ञेषुचमयादव १९ अथाचम्यनिदिध्यासेयउपतिष्ठतभास्करं । अपध्यानेतिहासैश्चदिनशेषंनयेद्बुधः ॥ २० ॥

پراپت ہوتا ہے ۱۸ پاتر مین بھوجن کر جو گی نتر پڑھ کر نت دھوونے - وہ پاتر جس پر کار جگ کے لئے آت سدھ ہے ۱۹ اوسی پر کار سے دوکھت نہین ہے اب آچمن اور نِدِدھیاسن کر سورج کا استھان کرے جپ اور دھیان اور اتہاس سے باقی دن گذارنے ۲۰ ۴۴

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्ध्या कर घर में इस प्रकार से रात बितावे दे - हृदय कमल में आत्मा का ध्यान करे २१ जब धर्म में प्रीति हो और शान्ति हो और सब भूत आत्मा को बराबर जानने इन्द्रिय हो - वह परमात्मा पद को प्राप्त है जिसको प्राप्त

कृतसंध्यस्तोयविं नयेद्वेश्मादिषु । हृत्पुण्डरीकनिलयेध्यायेदात्मानम
व्ययं २१ यदिधर्म्मरतिः शान्तः सर्व्वभूतसमोवशी । प्राप्नोतिपरमंस्थानंय
त्प्राप्यनिवर्तते ॥ २२ ॥ त्रिदण्डभृद्योहिपृथक्समाचरेच्छनैःशनैर्य
तवहिर्मुखांक्षः । संमुच्यसंसारसमस्तबन्धनात्सयातिविष्णोरमृतात्मनःपद
म् ॥ २३ ॥ इतिहारीतेधर्म्मशास्त्रेषष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

होकर - पलटता नहीं २२ इन्द्रिय रहित जो धीरे धीरे भिक्षु होकर त्रिदण्ड धारण करे - वह संसार के बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष रूप ब्रह्म पद को प्राप्त होता है २३ छठवाँ अध्याय समाप्त हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरن اور آشرم کا دھرم لچھن کہہ چکے - جسکے لئے دو جات سورگ موکچھ کو پراپت ہوتا ہے ۱ اب جیسے ۴۵
سے جوگ شاستر کا اُتم سارانش کہتے ہیں - جسکے سُننے سے موکچھ چاہنے والا موکچھ کو پراپت ہوتا ہے ۲

वर्णिनामाश्रमाणांच कथितंधर्म्मलक्षणं। येनस्वर्गापवर्गञ्चप्राप्नुवंति द्विजातयः १ योगशास्त्रंप्रवक्ष्यामिसंक्षेपात्सारमुत्तमं। यस्यचश्रवणाद्यान्तिमोक्षञ्चैवमुमुक्षवः २ योगाभ्यासबलेनैवनश्येयुःपातकानितु। तस्माद्योगपरोभूत्वाध्यायेन्नित्यंक्रियापरः ३ प्राणायामेनवचनंप्रत्याहारेणचेन्द्रियं। धारणाभिर्वशेकृत्वापूर्व्वदुर्धर्षणंमनः ॥ ४ ॥ ४ ॥

جوگ ابھیاس لینے سے پاپ نشٹ ہوتا ہے - اِس لئے جوگ میں تتپر ہو کر نِت دھیان کیا کرے ۳ ۴۰
پرانایام کے لئے بچن اور بکھے نیرت سے اِندری اور دھارنا کے لئے دشٹ من کو بس کر کے ۴ +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाकार मन करके ज्ञानी बाप को ओर कर मोक्ष से आत्म सोच धिक धियान करे जिसको संसार का बंधन कहा है ५ आत्मा के लिये बाहर और भीतर टंकार हुवा सोना के समान - एकांत में बैठ कर मरत होने तक धियान करे ६

एकाकारमनामन्दबुधैरुपमलामयं । सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरंध्यायेत्जगद्दाधा
रमुच्यते ५ आत्मनावहिरन्तस्थंशुद्धचामीकरप्रभं । रहस्येकान्तमासी
नोध्यायेदामरणान्तिकं ६ यत्सर्वप्राणिहृदयंसर्वेषाञ्चयस्थितं । य
च्चसर्वजनैर्ज्ञेयंसोऽहमस्तीतिचिन्तयेत् ७ आत्मलाभसुखंयादृत्तयो
ध्यानमुदीरितं । श्रुतिस्मृत्यादिकंधर्म्मंतद्विरुद्धंनचाचरेत् ॥ ८ ॥ ८ ॥

प्र. ७

जो सब प्राणी को मन और सब के हृदे में स्थित है - जो सब के जानने जोग सोहम ही हैं इस प्रकार से चिंतना करे ७ आतम लाभ सुख को तप और धियान ही कहे चुके - वेद और स्मृत के धरम को और उसके बिरुद्ध न करे ८ +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रकार घोड़े से रहित रथ और रथ से रहित घोड़ा — इस प्रकार से तप और विद्या संयुक्त होती है ९ जिस प्रकार से मधु संयुक्त अन्न और अन्न संयुक्त मधु - और जिस प्रकार से दोनों पंखों से आकाश में चिड़िया उड़ती है १०

यथा रथो रथहीनस्तु यथा रथो रथिहीनकः। एवं तपश्च विद्या च संयुतं भेषजं भवेत् ९ यथान्नं मधुसंयुक्तं मधु वान्नेन संयुतं। उभाभ्यामपि पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः १० तथैव ज्ञानकर्मभ्यां प्राप्यते ब्रह्म शाश्वतं। विद्या तपोभ्यां संपन्नो ब्राह्मणो योगतत्परः ११ देहद्वयं विहायाशु मुक्तो भवति बन्धनात्। न तयाक्षीणदेहस्य विनाशो विद्यते क्वचित् १२

जिस प्रकार से ज्ञान और कर्म से नित्य ब्रह्म को प्राप्त होता है - इसी प्रकार विद्या और तप से संपन्न ब्राह्मण योग तत्पर ११ दोनों देह को छोड़कर बन्धन से जल्द मुक्त होता है - जिस प्रकार से क्षीण देह का विनाश कभी नहीं होता है १२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम सब बरन और आसरम का भाग कह आये - हे सरेसट दुवो सुनिये इसके लिये धरम १३ इस प्रकार से
सुन लोग सुरग मोछ का फल देने वाला धरम सुनकर - ओन रिखियों को प्रनाम करा अपने अपने आसरम को जाते भये १४

नयातेकथितःसर्व्वोवर्णाश्रमविभागशः । संक्षेपेणद्विजश्रेष्ठाधर्म्मस्ते
षांसनातनः १३ श्रुत्वैवंमुनयोधर्म्मंस्वर्गमोक्षफलप्रदं । प्रणम्यतमृषिं
जग्मुर्मुदिताःस्वंस्वमाश्रमं १४ धर्म्मशास्त्रमिदंसर्वंहारीतमुखनिःसृ
तं । अधीत्यकुरुतेधर्म्मंसयातिपरमांगतिं । १५ । ब्राह्मणस्यतुयत्क
र्म्मकथितंवाहुजस्यच । उरुजस्यापियत्कर्म्मकथितंपादजस्यच ॥ १६ ॥

सरी हारीत जी के मुख से निकला हुआ जो धरम शास्त्र यह है - इसको पढ़ कर धरम करे सो परम गत को प्राप्त हो १५
ब्राह्मन और छत्री के लिये जो करम कहे हैं — और बैस और सूदर के लिये जो कहा है १६ + १५ + १६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اوسکے سوای برتنے مین چلد ذات سے پتت ہوتا ہے - جسکے لئے جو دھرم کہہ چکے وہ دھرم اوسیکا ہے ۱۷
اسواسطے بپت سے رہت دوج اپنے دھرم کو نت کرے - ہے براہمنون مین اندر چار ورن اور چار آشرم

अन्यथावर्तमानस्तुसद्यःपतितजातितः। योयस्याभिहितोधर्म्मःसतु
तस्यतथैवच १७ तस्मात्स्वधर्म्मंकुर्वीतद्विजोनित्यमनापदि। वर्णश्चत्वा
रोराजेन्द्रचत्वारश्चापिचाश्रमाः १८ स्वधर्म्मंयेतुतिष्ठन्तितेयान्तिपरमां
गतिं। स्वधर्म्मेणयथान्नृणांनारसिंहःप्रसीदति १९ नतुष्यतितथान्येन
कर्म्मणामधुसूदनः। अतःकुर्व्वन्निजंकर्म्मयथाकालमतन्द्रितः।२०।

والے ۱۸ اپنے دھرم مین جو رہتے ہین وہ پرم گت کو پراپت ہوتے ہین - اپنے دھرم کے لئے نرسنگھہ کے اوپر جیسے
نرسنگھہ جی پرسن ہوتے ہین ۱۹ اوسطرح اور کرم سے کرم سیوون پرسن نہین ہوتے - اسلئے نراس ہوکر جتنا کال اپنے کرم کو کرتا رہے ۲۰

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजारों वनिता के मालक नरसिंघ के घर में प्राप्त होता है - अपने वैराग बल को लिये हुये क्रियावान जोगी ५०
सदा परब्रह्म को धियान करे २१ सत और सुख रूप और नित्य और आदि जो विष्णु का पद है उसको देह छोड़कर प्राप्त होता है २२

सहस्रानीकदेवेशंनारसिंहञ्चसालयम । उत्पन्नवैराग्यबलेन
योगीध्यायेत्परंब्रह्मसदाक्रियावान ॥ २१ ॥ सत्यंसुखंरूपम
नंतमाद्यंविहायदेहंपदमेतिविष्णोः ॥ २२ ॥
इतिहारीतेधर्मशास्त्रेसप्तमोध्यायः ७ ॥समाप्तम् ॥

लि· स्वामीदयाल

सातवां अध्याय समाप्त हुआ ॥

सरी हारीत जी का बनाया हुआ धर्म शास्त्र समाप्त हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवर्त स्मृति १

सरी गणेशायनमः सरब वेद अंग के जानने वाले सरी सम्बर्त जी एकेले बैठे थे - धर्म के चाहने वाले रिखे लोगों ने उनके पास जाकर पूछा कि हमारी इच्छा है कि हे भगवन् द्विजों को धर्म की साधना इन से

श्रीगणेशायनमः ॥ संवर्तमेकमासीनं सर्ववेदांगपारगं। ऋषयस्तमुपागम्यपप्रच्छुर्धर्मकांक्षिणः १ भगवन्श्रोतुमिच्छामोद्विजानांधर्मसाधनं। यथावद्धर्ममाचक्ष्वशुभाशुभविवेचनं २ वामदेवादयःसर्वेतंपृच्छंतिमहौजसं। तानंब्रवीन्मुनीन्सर्वान्प्रीतात्माश्रूयतामिति ३ स्वभावाद्विचरेद्यश्चकृत्स्नसारःसदामृगः। धर्मदेशःसविज्ञेयोद्विजानांधर्मसाधनं ॥ ४ ॥

जो धर्म सब और इसके साधन का बताने वाला है वा दीवा सब मुनीन ने उस महातेजी से यह पूछा - तब प्रसन्न आत्मा होकर सब मुनीन से कहा कि सुनिये सब धर्मों का मूल जिस में सदा विचरता है - उसको धर्म देशिक और द्विज के धर्म का साधन जानना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनीत दोष सदा गुरु का हित करे - ब्रह्मचारी होकर मांस और सुगन्ध और मद्य और स्त्री से अलग रहे ५ जब तक तारे देखे पड़ें तब तक सन्ध्या करे पिछली सन्ध्या जब सूरज आधे डूब जावे

उपनीतो द्विजो नित्यं गुरुवेदितमाचरेत्। सुगंधमधुमांसानि ब्रह्मचारी विवर्जयेत् ५ संध्यां प्रातः सनक्षत्रामुपासीत यथाविधि। सादित्यां पश्चिमां संध्यामद्य स्तमितभास्करे ६ तिष्ठन्पूर्वां जपंकुर्यात्सावित्रीमर्कदर्शनात्। आसीनः पश्चिमां संध्यां सम्यगृक्षविभावनात् ७ अग्निकार्यं चकुर्वीत मेधावीतदनंतरं। ततोधीयीत वेदंतु वीक्षमाणो गुरोर्मुखं ८

तब करे ६ सूरज देखने से पहले और पिछली सन्ध्या में तारे देखने से पहले गायत्री का जप करे ७ और पीछे ब्रह्मचर्य धारण करे - फिर गुरु का मुख देखता हुआ वेद पढ़े ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

پہلے اُکار سنجکت بیاہرت سہت - گایتری کرم سے پڑھ کر بید پڑھے ۹ دونون ہاتھ جوڑ کر دونون جانگھون
پر رکھ کر - گرو کی آگیا کے انسار کرے دوسری اور چت نہ لگاوے ۱۰ برتی برہم چاری سدا سانجھ

प्रणवं प्राक्प्रयुंजीत व्याहृतीस्तदनंतरं। गायत्रीं चानुपूर्वेण ततो वेदं समा
रभेत ८ हस्तौ तु संयतौ धार्यौ जानुभ्यामुपरिस्थितौ गुरोरनुमते कुर्वात
पढ्वान्यमतिर्भवेत् १० सायंप्रातस्तु भिक्षेत ब्रह्मचारी सदाव्रती। नि
वेद्य गुरवेऽश्नीयात्मा ङ्क्षुखो वाग्यतः शुचिः ११ सायंप्रातर्द्विजातीना
मशनं श्रुतिनोदितं। नांतरा भोजनं कुर्यादग्निहोत्री समाहितः। १२।

اور گیان کے بھکشا مانگے - اور گرو کو دے کر پیشتر ہو کر پورب مُونہہ مون ہو کر بھوجن کرے ۱۱ دو جاتیون
کا بھوجن سانیکال اور پراتہ کال کا بید کے انسار کہا گیا ہے - اور اگن ہوتر کرنے والا دوج بیچ مین بھوجن نکرے ۱۲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोज पहले आचमन करके भोजन करे और भोजन के पीछे आचमन करे - और जो बिना आचमन के भोजन करता है उसको
प्रायश्चित करना चाहिये १३ बिना आचमन के जो कोई जल पीता ही या भोजन करता ही वह दोज - आठ हजार गायत्री की जपने से शुद्ध

आचम्यैवतुभुंजीतभुक्त्वाचोपस्पृशेद्द्विजः। अनाचांतस्तुयोश्नीयात्प्राय
श्चित्तीयतेतुसः १२ अनाचांतःपिबेद्यस्तुयोपिवाभक्षयेद्द्विजः। गायत्र
ष्टसहस्रंतुजपंकुर्वन्विशुद्धति १३ अकृत्वापादशौचंतुतिष्ठन्मुक्तशिखे
पिवा। विनायज्ञोपवीतेनत्वाचांतोप्यशुचिर्भवेत् १५ आचामेद्ब्रह्मतीर्थे-
नचोपवीतीत्वुदङ्मुखः। उपवीतीद्विजोनित्यंप्राङ्मुखोवाग्यतःशुचिः १६

होता ही १४ बिना पाउन धोई और बिना सिखा बांधे और बिना जनेऊ पहनी हुई आचमन किया हुआ दोज भी अशुद्ध होता है १५ जनेऊ
पहन कर उत्तर मुखसे या पूरब मुखसे दोज मौन होकर आचमन करे तब पवित्र होता है १६ ÷ १६ ÷ १६ ÷ १६ ÷

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

جل کے بھیتر آچمن کرنے سے اَنتہ کرن سُدّھ ہوتا ہے اور اَستھل مین آچمن کرنے سے باہر کے انگ سُدّھ ہوتی ہین
اس پرکار سُدّھ کی پراپت ہوتی ہے ۱۷ کلائی تک ہاتھ جل سے دھووے اور اوسی پرکار پانون دھووے دو مرتبہ مُکھ

जलेजलस्थआचांतस्थलाचांतोवहिःशुचिः। वह्निंतस्थआचांतएवंशुद्धि
मवाप्नुयात् १७ आमणिबंधादस्तौचपादावद्भिर्विशोधयेत्। परिमृज्यद्भि
रास्यंतुन्नासेअंगानिचस्पृशेत् १८ स्नात्वापीत्वाताथाक्षुत्वाभुक्त्वास्पृष्ट्वाद्वि
जोत्तमः। अनेनविधिनासम्यगाचांतःशुचितामियात् १९ मूद्धःशुद्ध्यति
हस्तेनवैश्योदंतेषुवारिभिः। कण्ठगतैःक्षत्रियस्तुआचांतःशुचितामियात २०

جل سے دھوکر بارہ انگ چھوے ۱۸ اسنان کرے جل پیے بھوجن کرے اور کوئی چیز اَسپرس کرے تو اس بدھ سے آچمن کرنے سے سُدّھ کی پراپت ہوتی
ہے ۱۹ سوُدر ہاتھ مین جل لیکر آچمن کرے بَیس اَتنی جل سے سُدّھ ہوتا ہے جو دانتون تک پہونچے چھتری اَتنی جل سے سُدّھ ہوتا ہے جو گلے تک پہونچے ۲۰

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

آسن پر پانون دھرنے سے اور کھڑاون پہنے کبھی شُدّھ نہین ہوتا ۲۱ جس نے سندھیا نہین کی اور ہون بھی نہین کیا وہ اسنان کرکے آٹھ ہزار گایتری ساوذھان ہوکر جپے ۲۲ سُوتک کا اَن اور نوین سرادھ اور

शासंनारूढपादस्तुकृतावंशक्यिकस्तथा । शारूढपादुकोवापि ।
तिकदाचन २१ उपासीतनचेत्संध्यामग्निकार्यंनवाकृतं । गायच्यष्टसह
संतुजपेत्स्नात्वासमाहितः २२ सूतकान्नंनवश्राद्धंमासिकान्नंतथैव
। ब्रह्मचारीतुयोन्नीयात्त्रिरात्रेणैवशुद्धयति २३ ब्रह्मचारीतुयोगच्छेत्स्त्रि
यंकामप्रपीडितः । प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रमथ तेकंसुयंव्रितः ॥ २४ ॥

ماسکا اَن جو بھوجن کرتا ہے ۔ وہ برہم چاری تین رات برت کرنے سے شُدّھ ہوتا ہے ۲۳ جو برہم چاری کام سے پریرت ہوکر استری گمن کرتا ہے ۔ اوسکو چاہیئے کہ پراجاپت جگ کرے یا ایک کرچھ چاندراین برت کرے ۲۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो برہم چاری مانس اور مدرا کھاتا ہے - اوسکو چاہیے کہ پراجاپت جگت کرے اور پیکھلا ہون کرے تب شدھ ہو ۲۵
جب کوئی پرتبندھ پڑے تب برہم چاری کھیر کا ہوم کرے - اور شاکل ہوم کرنیوالے منتر و نسے گھی ہوم کرے ۲۶

ब्रह्मचारीतुयोमीयान्मधुमांसंकथंचन। प्राजापत्यंतुकृत्वासौमौंजीहो
मेनशुध्यति २५ निर्वपेत्पुरोडाशंब्रह्मचारीतुपर्वणी। मंत्रैःशाकलहौमांगै
रनावार्ज्यंचहोमयेत २६ ब्रह्मचारीतुयःस्कंदेत्कामतःशुक्रमात्मनः।
अवकीर्णिव्रतंकुर्यात्स्नात्वाशुद्ध्येत्कामतः २७ भिक्षाटनमटित्वातुस
स्थोत्वेकान्नमश्नुते अश्नात्वाचैवयोभुंक्तेगायत्र्यष्टशतंजपेत् ॥ २८ ॥

جو برہم چاری کام کے بس ہو کر بیج کو گرا دیتا ہے - وہ اسنان کر کے نشکام ہو کر اوکیرن برت کرنے سے شدھ ہوتا ہے ۲۷
بھیکھ مانگ کر سبھیت بیٹھ کر ایک اَن بھوجن کرے - اور جو بنا اسنان کئے بھوجن کرتا ہے وہ آٹھ سو گایتری جپے تو شدھ ہو ۲۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूद्र के हाथ से भोजन करे या पानी पीवे - वह दिन रात उपास करके पंच गव्य खाने से शुद्ध होता है २९
बासी अन्न और जूठा और जिसमें बाल गिरा पड़ा हो खावे तो दिन रात व्रत करके पंच गव्य खावे तो शुद्ध हो ३० जो शूद्र के

गृहस्थेनयोऽश्नीयात्पानीयंवापिवेत्क्वचित्। अहोरात्रोषितोभूत्वापंच
गव्येनशुद्धति २९ भुक्तंपर्युषितोच्छिष्टंभुक्तान्नेकेशदूषितम्। अहोरात्रो
षितोभूत्वापंचगव्येनशुद्धति ३० शूद्राणांभोजनेभुक्त्वाभुक्त्वावाभिन्नभो
जने। अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्धति ३१ दिवःस्वपितियःस्वस्थो
ब्रह्मचारीकथंचन। स्नात्वासूर्य्यंसमीक्षेतगायत्र्यष्टशतंजपेत् ॥ ३२ ॥

भोजन में भोजन करता है और जो पंक्ति के बाहर हो गया उसका भोजन खाता है - वह दिन रात व्रत करके पंच गव्य खाने से
शुद्ध होता है ३१ जो ब्रह्मचारी आरोग्य हो कर दिन में सोजावे - वह स्नान करके आठ सौ गायत्री जपे ३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

یہ دھرم پہلے آشرم مین رہنے والیکو کہا گیا - اس پرکار جو رہتا ہے وہ پرم پد کو پاتا ہے ۳۳ اسکے اُپرانت
دوج سماورت مین جب آوے تب سُبرنا استری کے ساتھ بیواہ کرے - وہ اسی اچھے کُل مین پیدا ہوا اور اچھے لکشن

एषधर्मस्समाख्यातःप्रथमाश्रमवासिनां। एवंसंवर्तमानस्तुप्राप्नोतिपर
मांगतिं ३३ अतोद्विजःसमावृत्तःसवर्णास्त्रियमुद्वहेत्। कुलेमहतिसं
भूतांलक्षणैस्तुसमन्वितां ३४ ब्राह्मेणैवविवाहेनशीलरूपगुणान्विता।
अतःपंचमहायज्ञान्कुर्यादहरहर्द्विजः ३५ नहापयेत्तुतान्सक्तःश्रेय
स्कामःकदाचन। हानिंतेषांतुकुर्वीनसदामरणजन्मनोः ॥ ३६ ॥

والی ہو ۳۴ براہم بواہ کی بدھی بواہ کرے شیل روپ والی استری سے - اوسکے اُپرانت پنچ مہا جگ پرت دن
ہر روز ۱۲
دوج کرے ۳۵ اپنی سامرتھ بھر پنچ جگ کو کبھی نہ چھوڑی جو کلیان چاہے اور جب جنم یا مرن ہو تب پنچ جگ نکری ۳۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण दस दिन तक दान देने और पढ़ने से बर्जित रहे। छत्री बारह दिन बैस पन्द्रह दिन ३७ सूद्र एक महीने
में सुद्ध होता है जैसा कि स्मृति मन का बचन है। प्रेत के वास्ते न्हान और जल स्नान करके प्रेत के गोत्र वालों

विप्रोदशाहमाशौतदानाध्ययनवर्जितः। क्षत्रियोद्वादशाहानिवैश्यः
पंचदशैवतु ३७ शूद्रःशुद्ध्यतिमासेनसंवर्तवचनंयथा। प्रेतायान्नंजलंदे
यंस्नात्वातज्ञातिभिर्जैस्सह ३८ प्रथमेन्हितृतीयेचसप्तमेनवमेतथा। च तु
र्थेहनिकर्तव्यमस्थिसंचयनंद्विजैः ३९ ततस्संचयनादूर्ध्वमंगस्प
र्शोविधीयते। चतुर्थेहनिविप्रस्यषष्ठेवैक्षत्रियस्यच ॥ ४० ॥ ४० ॥

के साथ देवे ३८ पहले या तीसरे या सातवें या नवें। या चौथे दिन प्रेत के हाड़ों को दूध से धोवे ३९
हाड़ उठाकर के अंगों को छूवे बुद्धि से। चौथे दिन ब्राह्मण छठवें दिन छत्री ४० ÷ ४० ÷

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

آٹھوین یا دسوین دِن بیس اور سودر اسپرش کرے - پیدا ہونے مین بھی یہی بدھ اچھے لوگون نے کہا ہے

۴۱ بید برجت جو براہمن ہے وہ دس رات مین سُدّھ ہوتا ہے - پُتر کا جنم جب ہو تب پِتا بستر سہت اسنان کرے

षष्ठेदशमेचैवस्पर्शःस्याद्वैश्यशूद्रयोः । जातस्यापिविधिर्दृष्टएषएव
महर्षिभिः ४१ दशरात्रेणशुद्ध्येतविप्रोवेदविवर्जितः । जातेपुत्रे पि
तुःस्नानंसचैलंतुविधीयते ४२ माताशुद्ध्येद्दशाहेनस्नानात्तुस्पर्शनंपि
तुः । होमंतत्रप्रकुर्वीतशुष्कान्नेनफलेनवा ४३ पंचयज्ञविधानंतुन
कुर्यान्मृत्युजन्मनोः । दशाहात्तुपरंसम्यग्विप्रोधीयीतधर्मवित् । ४४ ।

۴۲ ماتا دس دن مین سُدّھ ہوتی ہے اور جب اسنان کر چکے تب پِتا کو چھُونا چاہیئے - اور تب ہوم کرے سُوکھی اَن سے

یا پھل سے ۴۳ پنچ جگّ کی بدھ مَرن اور جنم مین نکرے - دس دِن کے بعد دھرم جاننے والا براہمن اچھی طرح سے بید پڑھے ۴۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اسبھہ کے دُور ہونے کے لئے انیک پرکار کا دان دے - جو جو دان لوک کو اور اپنے کو پیارا ہو سو دے ۴۵
اور اُچھے پھل کا چاہنے والا منکھیہ دان بدّیا دان کو دے - انیک پرکار کی وِدّیا اور بہت دھان کو ۴۶

दानंतुविविधंदेयमशुभानांविनाशनं । यद्यदिष्टतमंलोकेयच्चास्य
दयितंभवेत् ४५ ततद्गुणवतेदेयंतदेवाक्षयमिच्छता । नानाविधानि
द्रव्याणिधान्यानिसुबहूनिच ४६ समुद्रे यानिरत्नानिनगेविगतकल्म
षः । दत्वागुणाढ्यविप्रायमहतींश्रियमाप्नुयात ४७ गंधमाभरणंमा
ल्यंयःप्रयच्छतिधर्मवित् । समुगंधःसदाहृष्टोयत्रतत्रोपजायते ।४८।

اور سمندر والے رتنوں کو پاپ رہت منکھیہ - گن وان براہمن کو دے کر بڑی لکچھمی کو پاتا ہے ۴۷ سگندھ
والی بستو اور گہنا اور مالا جو دھرماتما دیتا ہے - وہ جہان کہیں پیدا ہوتا ہے وہاں سگندھ جگت اور پریہ ہتا ہے ۴۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिद्यावान اور کلین براہمن جو بست مانگے وہ اوسکو دینے سے بڑا پھل ہوتا ہے ۴۹ رشیل وان براہمن جو
رِدّیا اور کُل سے جُگت ہو۔ اور پبتر اور گیان وان ہو اوسکو ہویہ اور کویہ سے پوجنا چاہیے ۵۰ انیک

श्रोत्रियायकुलीनायाभ्यर्थिनेहिविशेषतः। यद्दानंदीयतेभक्त्यातद्भवे
त्सुमहत्फलम् ४८ आढ्यशीलसम्पन्नंश्रुतेनाभिजनेनच। शुचिंवि
प्रमहाप्राज्ञंहव्यकव्यैस्तुपूजयेत् ५० नानाविधानिद्रव्याणिरसवंती
र्पितानिच। श्रेयस्कामेनदेयानितदेवाक्षयमिच्छता ५१ वस्त्रदातासु
वेषःस्याद्रूप्यदोरूपमेवच। हिरण्यदःसमृद्धिंचतेजश्चायुश्चविंदति। ५२॥

پرکار کی دَرَبّ اور رس والی پیاری بست۔ کلیان چاہنی والا دیوے جو اچھے پھل کی اِچھا کرے ۵۱ بستر کا دینے
والا اچھے بھیس کو پاتا ہے اور چاندی دینے والا رُوپ پاتا ہے۔ سونا دینے والا رِدّھ اور تیج اور آیُرل پاتا ہے ۵۲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब जीवों को बश करने से सब कामना पूरी होती है - और बहुत आयु बल और बड़ा सुख को प्राप्त होता है ५३
अन्न और जल और घी देने वाला सुखी होता है - गेहूं देने से गेहूं वाला और बड़े फल फूल को प्राप्त होता है ५४

भूताभयप्रदानेनसर्वान्कामानवाप्नुयात् । दीर्घमायुश्चलभतेसुखीचै
वसदाभवेत ५३ धान्योदकप्रदायीचसर्पिदःसुखमेधते । अलंकृतस्त्व
लंकारंदातामोतिमहत्फलं ५४ फलमूलानिविप्रायशाकानिविविधा
निच । सुरभीणिचपुष्पाणिदत्वाप्राज्ञस्तुजायते ५५ ताम्बूलंचैव योद
द्याद्ब्राह्मणेभ्योविचक्षणः । मेधावीसुभगःप्राज्ञोदर्शनीयश्चजायते ५६

फल और कन्दमूल और शाक और अनेक प्रकार के सुगन्ध वाले फूल जो ब्राह्मन को देता है वह बुद्धिमान होता है ५५
जो बुद्धिमान सुन्दर ब्राह्मन को पान खिलाता है वह ज्ञान वान और रूप वान और बुद्धिमान दर्शन के योग्य होता है ५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ाऊं और जूता और छतरी और चारपाई और और आसन - और अनेक प्रकार के पहान देने से वर्ष का मालिक होता है ५७ जाड़े में जो लकड़ी और अग्नि देता है वह परकाशित होकर बुद्धिमान और रूपवान और भाग्यवान होता है ५८

पादुकोपानद्छत्रंशयनान्यासनानिच। विविधानिचयानानिदत्वाद्व्यपतिर्भवेत् ५७ दद्याद्यः शिशिरेवन्हिंबहुकाष्ठंप्रयत्नतः। कायाग्निदीप्तिमान्नित्वंरूपंसौभाग्यमाप्नुयात् ५८ औषधंस्नेहमाहारंरोगिणांरोगशांतये। दत्वास्याद्रोगरहितःसुखीदीर्घायुरेवच ५९ इंधनानिचयोदद्याद्विप्रेभ्यःशिशिरागमे। नित्यंजयतिसंग्रामेश्रियायुक्तस्तुदीयते ६०

औषध और तेल और घी जो रोगी को रोग दूर होनेके वास्ते - जो देता है वह रोग रहित होकर खरा खूबी और सुखी होता है ५९
जाड़ा आने में जो कोई ब्राह्मन को लकड़ी देता है - वह सदा संग्राम में जीतता है और लक्ष्मी संयुक्त होता है + ६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कन्या को गहना और कपड़ा अपना करा उसके समान वर को - ब्राह्म विवाह से पूजा करके देता है ६१ वह कन्या के देने से बड़ी लक्ष्मी को पाता है सज्जनों में बड़े जस को पाता है ६२ जो ज्योतिष्टोम और अतिरात्र यज्ञों से

अलंकृत्य तुयः कन्यां वराय सदृशाय वै । ब्राह्मेण तु विवाहेन ददाति तां तु पूजिताम् ६१ सकन्यायः प्रदानेन स्वर्गलोके महीयते । साधुवादं सवैसद्भिः कीर्तिं प्राप्नोति पुष्कलां ६२ ज्योतिष्टोमातिरात्राभ्यां शतं शतगुणीकृतम् । प्राप्नोति पुरुषोदत्वा ह्योममंत्रैश्च संस्कृतां ६३ तां दत्वा तु पिता कन्याभूषणाच्छादनाशनैः । पूजयन्स्वर्गमाप्नोति नित्यमुत्सववृद्धिषु ६४

सोगुना अधिक फल होता है जो होम वाले मंत्रों से संस्कार करके कन्या दान करे ६३ गहना और कपड़ा और बहुत अन्न कन्या को पूज कर देने से पिता को नित्य उत्सव वालों में प्रीति और स्वर्ग होता है ६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कنیا کے رُوم ہوتے ہین تب اوسکو چندرمان بھوگ کرتی ہین۔ اور جب رجسولا ہوتی ہی تب گندھرب بھوگ کرتی ہین۔ کچ دیکھے بڑی سی اگن بھوگ کرتے ہین ۵ ۷ آٹھ برس کی کنیا گوری ہوتی ہے اور نو برس کی روہنی۔ اور دس برس تک کنیا اس سے آگے

रोमकालेतुसंप्राप्तेसोमोभुंक्तेयकन्यकां। रजोदृष्टातुगंधर्वाःकुचौदृष्टातु पावकः ॥६५॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरीनववर्षातुरोहिणी। दशवर्षाभवेत्कन्या अतऊर्ध्वंरजस्वला ॥६६॥ माताचैवपिताचैव ज्येष्ठोभ्राता तथैवच। त्रयस्तेनरकंयांतिदृष्ट्वाकन्यांरजस्वलां ६७ तस्माद्विवाहयेत्कन्यांयावन्नर्तुमतीभवेत्। विवाहोह्यष्टवर्षायाःकन्यायास्तुप्रशस्यते।६८।

پھر رجسولا ہوتی ہے ۶ ۷ ماتا اور پتا اور بڑا بھائی یہ تینون کنیا کو رجسولا دیکھنے سے نرک کو جاتے ہین ۶ ۷ اس سے رِتُ متی ہونے سے پہلے کنیا کو بواہ دینا اُچت ہے۔ آٹھ برس کی کنیا بواہ دینا بڑائی کے جوگ ہے ۶ ۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैल اور آنولہ دینے اور اسنان کرا دینے سے انگ راگ دینے والا منکھیہ برسن رہتا ہے اور بھاگوان ہوتا ہے ۶۹
جو تیل بوجھا پہلتے ہیں اور سوودے ہیں اونکو جتھا شکتی انکرت کرکے تل سمیت جو منکھیہ براہمن کو دیتا ہے ۷۰

तैलमलकदाताचस्नानाभ्यंगप्रदायकः। नरःप्रहृष्टश्चासीतशुभगन्धो
पजायते ६९ अनड्वाहौतुयोदद्याद्विजेसीरेणसंयुतौ। अलंकृत्यययो
शक्त्याधूर्वहौशुभलक्षणौ ७० सर्वपापविशुद्धात्मासर्वकामसमन्वितः
वर्षाणिवसतेस्वर्गेरोमसंख्याप्रमाणतः ७१ धेनुंचयोद्विजेदद्यादलं
कृत्यपयस्विनीं। कांस्यवस्त्रादिभिर्युक्तांस्वर्गलोकेमहीयते ॥७२॥

وہ منکھیہ سب پاپون سے چھوٹ کر سب کامنا جگت ہوکر۔ اتنے برس سورگ مین باس کرتا ہے جتنے روم اوسکی ہون ۷۱
جو گئو کی سینگ اور کھر مڈھا کر جھول پہنا کر دوہنی سمیت براہمن کو دیتا ہے اوسکی پوجا سورگ مین ہوتی ہے ۷۲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जس بھوم مین اَن پیدا ہوتا ہے ایسی سریشٹ بھوم اور ترن گئو بید پاٹھی براہمن کو دینے سے سورگ مین اوسکی پوجا ہوتی ہے ۷۳
جتنی اَن کی جڑین ہوتی ہین اور جتنے گئو کے رُوَان ہوتے ہین اُتنے برس سورگ مین پوجا ہوتی ہے ۷۴

भूमिंसस्यवतींश्रेष्ठांब्राह्मणेवेदपारगे। गांदत्वाईप्सितांचस्वर्गलोकेम
हीपते ७३ यावंतिशस्यमूलानिगोरोमाणिचसर्वशः। नरस्तावंतिवर्षा
णिस्वर्गलोकेमहीपते ७४ योददातिशफैरौप्यैर्हेमशृंगीमगोमिणीं
सवत्सांवाससावीतांसुशीलांगांपयस्विनीं ७५ तस्यांयावंतिरोमा
णिसवत्सायांदिवंगतः। तावंतिवत्सरांतानिसनरोब्रह्मणोंतिके ७६

سُودھی گئو کو کھر چاندی سے منڈھوا کر اور سینگ سونے سے منڈھوا کر۔ بچھرا سمیت کپڑا اُڑھا کر جسکے دُودھ بھی ہوتا ہو
۷۵ دینے سے اوسکا دینے والا اُتنے برس برہما کے پاس باس کرتا ہے جتنے رُوَان بچھرا سمیت ہون ۷۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मनुष्य बलवान बैलों को ऊपर की बद्धों के आसार दान करता है - उसको भी गौ के दान करने से दस गुना अधिक फल होता है ७६ अग्नि का बड़ा बेटा सोना है और पृथिवी बहन की है और गौ सूर्य की कन्या है - जो मनुष्य इन तीनों का दान करता है वह मानो तीनों

योदद्यात्तिवलीवर्दमुक्तेनविधिनाशुभम् । सव्यंगगोप्रदानेनदत्तंदश
गुणंफलं ७७ अग्नेरपत्यंप्रथमंसुवर्णंभूर्वैसमीसूर्यसुताश्चगावः ।
लोकास्त्रयस्तेनभवंतिदत्तायःकांचनंगांचमहींचदद्यात् ७८ सर्वेषामेवदा
नानामेकजन्मानुगंफलं । हाटकक्षितिगौरीणांसप्तजन्मानुगंफलम् ७९ अन्न
दस्तुभवेन्नित्यंसुतृप्तोनिर्भृतःसदा । अंबुदश्चसुखीनित्यंसर्वकर्मसमन्वितः ८०

लोक का दान करचुका ७८ सब दानों का फल एक ही जन्म में होता है - परंतु सोना और पृथिवी और गौ की दान का फल सात जन्म तक बना
रहता है ७९ अन्न का देनेवाला तृप्त होकर परिपूर्ण रहता है - और जल का देने वाला सब का भरा कर सदा सुखी रहता है ८०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

سب دانون سے سوائے اَن کا دان کہا گیا - کیونکہ سب جیوون کا پران اَن ہی سے رہتا ہے ۸۱ اور کلپ
کلپ بکھے برہما اَن سے سرجت ہین - بس سے اَن سے بڑھ کر اور کوئی دان نہین ہے ۸۲ اَن سے

सर्वेषामेव दानानामन्नदानंपरंस्मृतं । सर्वेषामेवजंतूनां यतस्तज्जीवितं
परं ८१ यस्मादन्नात्प्रजाः सर्वाः कल्पेकल्पेसृजत्प्रभुः । तस्मादन्नात्प
रंदानंविद्यतेनहिकिंचन ८२ अन्नाद्भूतानिजायंतेजीवंतिचनसंशयः
मृतिकागोशकृद्भर्मानुपवीतंतथोत्तरम् ८३ दत्वागुणाढ्यविप्रायकु
लेमहतिजायते । मुखवासंतुयोदद्याद्दंतधावनमेवच ॥ ८४ ॥

پرانی اَتپن ہوتے ہین اور جیتے ہین اسمین سندیہہ نہین ہے - مٹی اور گوبر اور کُسا اور جنیؤ اور انگوچھا ۸۳ گنوان
براہمن کو دینے سے اُتم کُل مین پیدا ہوتا ہے - پان اور دانتون کے دان کرنے سے ۸۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धोदक होकर सदा पवित्र बना रहता है - ब्राह्मण को पानी दोने के वास्ते जो झारी जल देता और गडुआ ८५
इन्द्रजी के शुद्ध होने के वास्ते जो जल देता है वह सदा शुद्ध बुद्धवाला होता है - औषध पथ्य आहार स्नेह अभ्यंग प्रति ८६
दिन देता है वह योगियों से सेवित विवर्जित है - गुड़ मिश्री सेंधा लवण व्यंजन नित्य ८७ सुरभी क्षीर पानी
देकर अत्यंत सुखी होता है - दानों में विविध सम्यक फल मैंने दिखाया ॥ ८८ ॥

जो रोगी को देता है वह रोग से बचा रहता है - गुड़ और रस और नून और पंचगव्य ८६ और अच्छी बस्त खाने के
जोग देने से सुखी होता है - ये अनेक दानों से फल कहा गया ८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक दान करने से ब्रह्मा के लोक में पूजित होता है - ब्राह्मण आपस में दान देते हैं और पूजते हैं ८९
और आपस में लेते हैं और तरते हैं और तारते हैं - अन्न दान सीखे देने योग्य हैं और और दान दे ९०

विद्यादानेनसुमतिर्ब्रह्मलोकेमहीयते । अन्योन्यान्नप्रदाविप्राःअन्यो-
न्यप्रतिपूजकाः ८९ अन्योन्यंप्रतिगृह्णंतितारयंतितरंतिच । दानान्ये
तानिदेयानितथान्यानिविशेषतः ९० दानार्हेकृपणाद्भिन्नःश्रेयस्कामे-
नधीमता । ब्रह्मचारियतिभ्यस्तुवपनंयस्तुकारयेत् ९१ नखकर्मादिकं
चैवंचक्षुष्मान्जायतेनरः । देवागारेद्विजातीनांदीपंदद्याच्चतुष्पथे ॥ ९२ ॥

आधा दान गरीब अंधी को दे - ब्रह्मचारी यती के बाल बनवा दे ९१ और नाखून कटवा दे तो आंखों वाला होता है
ब्राह्मण और देवता के स्थान पर चौराहे पर जो दीपक जलाता है ९२ + ९२ + ९२ + ९२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

سو بدھمان گیانی اور آنکھ والا ہوتا ہے - نت نیمت کاج مین اپنی سامرتھ بھر تل دان کرنے سے ۹۳ پتر دان اور پیش دان اور دھن دان ہوتا ہے - جو سنکلپ براہمن کے مانگنے پر جو بست دیتا ہے ۹۴ ترن اور کاٹھ آدک تو

मेधावी ज्ञानसम्पन्नश्चक्षुष्मान्सस दाभवेत । नित्येनैमित्तिके काम्ये तिलान्दत्वास्वशक्तितः ९३ प्रजावान्पशुमांश्चैवधनवान्जायतेनरः योयदाभ्यर्थितोविप्रैर्य्यद्यत्संप्रतिपादयेत ९४ तृणाकाष्टादिकं चैवगोभ्र दानसंभवेत । नवैश्वयीतनमसानयज्ञेनान्नतंवदेत ९५ अपवदेन्न विप्रस्यनदानंपरिकीर्तयेत । यज्ञोनृतेनक्षरतितपःक्षरतिविस्मयात ९६

وہ بھی گئودان کے برابر ہوتا ہے - سانیکال نہ سووے اور جگ مین جھوٹھ نہ بولے ۹۵ براہمن کا ایا دکھ دے جو دان دیا ہوا وسکو اپنے مونہہ سے نہ کہے - جھوٹھ کہنے سے جگ کا پھل اور بسمے کرنے سے تپ کا پھل جاتا رہتا ہے ۹۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मन का अपवाद करने से आयु बल कम होती ही और दान दी कर कहने से वह दान जाता रहता ही - यह चार काम सन्धिया समे बदान
नकी ९७ आचार मैथुन निद्रा पढ़ना - आचार (अतिमात्र भोजन करने) से रोग होता ही मैथुन करने से भयानक पुत्र होता है

आयुः विप्रापवादेन दानं च परिकीर्तनात्। चत्वार्येतानि कर्माणि संध्या
यां वर्जयेद्बुधः ९७ आहारं मैथुनं निद्रां तथा संपाठमेव च। आहाराज्जा
यते व्याधिर्गर्भो वैरूप्यमैथुनात् ९८ निद्रातो जायते लक्ष्मीः संपाठादायु
षः क्षयः। ऋतुमतीं तु योभार्यां संनिधौ नोपगच्छति ९९ तस्यान्नसि
तन्मासं पितरस्तस्य शेरते। कृत्वापि लौकिकं कर्माणि स्वभार्यापोषणे रतः १००

निद्रा (अतिमात्र सोने) से दरिद्रता प्राप्त होती है पढ़ने से आयु बल क्षीण होती ही - ऋतु मति जो स्त्री मौजूद हो रही हो उसके
पास जो नहीं जाता है ९९ उसके पितर लोग उसी स्त्री के रज में सोते हैं - घर का काम काज करके अपनी स्त्री की पुष्टि में रहता ही १००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ऋतु काल में स्त्री से गमन करता है वह ब्रह्मचर्य को पालता है। इस प्रकार गृहस्थी में रह कर दूसरे आश्रम से — १०१
बूढ़ी और उसके बाल पकने पर तीसरे आश्रम में ठहरे। फिर वानप्रस्थ हो कर स्त्री सहित या अकेला १०२ अग्नि होत्र को ग्रहण
करके चौथे आश्रम में जावे — १०३

ऋतुकालाभिगामी च स्वदारनिरतः सदा। पर्ववर्जं व्रजेच्चैनामृतुकालेऽष्टमीं गतिं। ऋषिर्यो नियतो नित्यं
ब्रह्मचर्यमवाप्नुयात् १०१ जटी पलितसंयुक्तस्तृतीयं तु समाश्रयेत्। वनं गच्छेत्ततः पश्चात्
त्रिषु कर्मसु १०२ गृहीत्वाग्निहोत्रं च यथाविधि १०३ भिक्षां चरेत्सदा ग्रामे
सायं च मूलफलादिभिः। कुर्यादध्ययनं नित्यमग्निहोत्रपरायणः १०४

करके होम की अग्नि में त्याग करे। वन वाली पवित्र चीज़ों से बढ़िया तक कच्चा भोजन बना कर होम करे १०३ भिक्षुक को
शाक और कन्दा और मूल आदि की भिक्षा दे। अग्नि होत्र में तत्पर हो कर वन में तीन काल होम करे १०४ + १०४ + १०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ہر ایک پرب مین پرب والی استناہ کرے - اس ریت سے بن مین رہ کر سب پدھون کا جاننے والا براہمن ۱۰۵
چوتھے آشرم کو جاے کر ودھ اور اندری کو جیت کر اگن اپنی دیہہ مین استھاپت کر کے دوج پھر ۱۰۶

अग्निंपार्वायणीयांतुप्रकुर्योत्प्रतिपर्वसु। उपित्वैवंवनेविप्रोविधिज्ञःस
र्वकर्मसु १०५ चतुर्थमाश्रमंगच्छेज्जितक्रोधोजितेन्द्रियः। अग्निमात्म
निसंस्थाप्यद्विजःप्रव्रजितोभवेत् १०६ वेदास्यासरतोनित्यमात्मविद्या
परायणः। अग्नौमिक्षाःसमादायमुनिःसप्तपंचवा १०७ अद्भिःप्रक्षाल्य
नाःसर्वमुंजीतसुसमाहितः। अरण्येनिर्जनेनित्यमुपरासीतमुक्तवान् । १०८ ।

بید کا ابھیاس کرتا ہوا تم پرتیا کا بچار کرے - مون ہو کر آٹھ یا سات یا پانچ بھکشا لے کر ۱۰۷
جل سے دھو کر ساودھان بیٹھ کر اوسکو بھوجن کرے بن مین جہان سنکھیہ نہ رہتے ہون وہان بسے ۱۰۸ ÷ ۱۰۸ ÷

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेला सोना बाचा करना से ईश्वर का स्मरन करे - मरत की इच्छा न करे और न जीने की १०१ अकाल काल को पहुंचे
जब तक आयु पूरी न होचुके - सब आश्रमों मेंन इसीतरह रहे कर करोधादि और इंद्रियों को जीत कर ११० ब्रह्मलोक को

एकाकीचिंतयन्नित्यंमनोवाक्कायकर्मभिः । मृत्युंचनाभिनंदेतजीवितं
वाकषंचन १०९ कालमेवप्रतीक्षेतयावदायुःसमाप्यते । संसेव्यचाश्रमा
न्सर्वान्नियतक्रोधोजितेन्द्रियः ११० ब्रह्मलोकमवाप्नोतिवेदशास्त्रार्थविद्द्वि
जः । आश्रमेषुचसर्वेषुप्रोक्तोयंप्राग्निकोविधिः १११ अतःपरंप्रवक्ष्या
मिप्रायश्चित्तविधिंशुभं । ब्रह्मघ्नश्चसुरापश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः । ११२ ।

पाता है वेद और शास्त्र की आज्ञा के अनुसार - सब आश्रमों में भोजन करने की यह कही गई १११ अब
इसके आगे प्रायश्चित की शुभ विधि कहते हैं - कि ब्राह्मन का मारने वाला और मदरा पीने वाला और चोरी करनेवाला और गुरु की सेज पर गमन करनेवाला ११२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

یہ چار و مہا پاپی ہین اور پانچوان وہ جو اونکی سنگت کرے - جو براہمن کو مارے اوسکو برہم ہتیا ہوتی ہی اس سے وہ بن
مین جاکر چھال کا بستر پہن کر جٹا رکھا کر جھنڈی لیکر ۱۱۳ بن پھل کھاتا ہوا سب کامنا کو چھوڑکر - گھومتا پھری جو بن کے

महापातकिनस्त्वेतत्संयोगीचपंचमः । ब्रह्मघ्नश्चवनंगच्छेदल्कावा
साजटीध्वजी ११३ वन्यान्येवफलान्यश्नन्सर्वकामविवर्जितः । भि
क्षार्थीविचरेद्ग्रामंबन्धैर्यदिनजीवति ११४ चातुर्वर्ण्यंचरेद्भैक्ष्यंवडंगीसंय
तःसदा । भिक्षास्त्वेवंसमादायवनंगच्छेन्ततःपुनः ११५ वनवासीसपाप
स्यात्सदाकालमनंदितः । एवंयन्मुच्यतेपापैर्ब्रह्महापापकृन्नरः ११६

پھلون سے جیون نہ دیکھ پڑے تو گانون مین گھومے ۱۱۴ چار برن سے بھکھا مانگی نیم سے بستر سے بدن کو چھپائی ہوئی - یہ بدھ بھکھا
لیکر گانون سے پھر بن کو جاوے ۱۱۵ پاپی بن مین اس بدھ سے اندری جیت رہ کر اپنا پاپ لوگون سے کہہ کہہ کر برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے ۱۱۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेनतुविधानेनंद्वादशाब्दंव्रतंचरेत्। सन्नियम्येन्द्रियग्रामंसर्वभूतोहितेरतः ११७ ब्रह्महत्यापनोदायततोमुच्येतकिल्बिषात। अतःपरंसुरापस्यनिष्कृतिंश्रोतुमर्हथ ११८ गौडीमाध्वींचपैष्टींचविद्येयान्विविधासुरा। यथैवैकातथासर्वानपात्व्याद्विजोत्तमैः ११९ सुरायस्तुसुरांतप्तांपिबेत्तत्यापमोक्षकः। गोमूत्रमग्निवर्णंवागोमयंवातथाविधं ॥ १२० ॥

इस मंत्र से बारह बरस व्रत करे — ११७ ब्रह्महत्या छूटती है और सब जीवों पर दया करता है
छूटने की इच्छा करे तब ब्रह्महत्या छूटती है — अब मदिरा पान करने वालों का प्रायश्चित्त ११८ गौड़ी और माध्वी और पैष्टी ये तीन प्रकार की मदिरा हैं
और इन की तीन प्रकार की मदिरा होती है — ये तीनों मदिरा एक ही समान हैं इन को पान करना उचित नहीं है ११९
मदिरा पान करने वाला उस पाप की छूटने के वास्ते मदिरा गरम करके पीवे — और गोबर को आग की तरह गरम करके और उसी तरह गोमूत्र को १२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اور گھی کو گرم کر کے پینا مدرا پینے والے کے واسطے برت کہا گیا - یہ پرائشچت کرنے سے اس پاپ سے چھوٹتا ہے ۱۲۱ اور سب
کا منا چھوڑ کر تین مہینے ہاس کرے - اور تین چاندرائن برت کرے جو مدرا پان کرنے کے برت ہیں ۱۲۲ اس پرکار

घृतंवाचीणिपेयानिसुरायोव्रतमाचरेत । मुच्यतेतेनपापेनमायश्चित्तेकृते
सति १२१ अथवैवावसेत्स्थंडिलंसर्वकामविवर्जितः । चांद्रायणानिवाची
णिसुरापव्रतमादिशेत १२२ एवंशुद्धिःसुरापस्यभवेद्विजितेंद्रियः । मद्य
मांसोदकंपीत्वापुनःसंस्कारमर्हति १२३ स्तेयंकृत्वासुवर्णस्यस्तेयंराज्ञे
निवेदयेत । ततोमुसलमादायस्तेनंहन्यात्सकृन्नृपः ॥ १२४ ॥ १२४ ॥

مدرا پان کرنے والا شُدّھ ہوتا ہے اسمیں سے یہ تین ہے - جس برتن میں مدرا رکھی جاوے اُسمیں جل بھی نہ پیوے پھر سنسکار
کے جوگ ہوتا ہے ۱۲۳ سونا چوراکر وہ سونا راجہ کو دیدے - اور راجہ موسل سے ایک مرتبہ مارے ۱۲۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो वह चोरे तो चोरी के पाप से आधा हो जाता है - और वन में जाकर छाल का वस्त्र पहन कर ब्रह्महत्या का व्रत करे १२५ इस प्रकार से शुद्धि होती है चोरी करने वाले की कही गई जैसा कि सम्बर्त मुनि का वचन है - गुरु की शय्या पर सोने वाला अग्नि के समान लोहे की शय्या पर सोवे १२६

यदि जीवति सस्तेन ततः स्तेयाद्विमुच्यते । अरण्ये चीरवासा वा चरेद्ब्रह्म
हणो व्रतं १२५ एवं शुद्धिः कृता स्तेयं संवर्तेन वचनं यथा । गुरुतल्पे शयान
स्तु तप्तस्स्याद्ध्योमये १२६ समालिंगेत्स्त्रियं वापि दीप्तां काष्ठमयीं कृ
तां । चांद्रायणानि कुर्याच्च त्रीणि वाद्विजः १२७ मुच्यते चैनतः पा
पात्प्रायश्चित्तैः कृतैस्त्रिभिः । एभिः संवर्तकः प्राह यतिः कश्चित्त्वपोहितः १२८

और लोहे की अग्नि बनवा कर उसको गरम करके उसके साथ भोग करे - और तीन या चार चान्द्रायण व्रत करे १२७ ऐसा प्रायश्चित करने से पाप से छूट जाता है - ऐसे पापियों के मित्र भी पापी हो जाता है १२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जो पाप اوپر کہہ آئے ہیں اونکے چھوٹنے کیواسطے جو جو برت کہے گئے ہیں سو سو کرنا چاہیئے۔ چھتری کیواسطے کرنے میں کرچھہ برت
کرنے سے شُدّھ ہوتا ہے ۱۲۹ ایس پاپ کے اُتار میں کرچھہ برت کری ساودھان ہوکر۔ بیس کی ہتیا جو کسی پرکار سے

तत्सापविशुद्ध्यर्थंतस्यैतंचरेत । क्षत्रियवधंकृत्वात्रिभिःकृ
च्छैर्विशुद्ध्यति १२८ कुर्याच्चैवानुरूपेणत्रीणिकृच्छ्राणिसंयतः । वैश्य
हत्यांतुसंभाषःकथंचित्काममोहितः १२९ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौकुर्वीतस
नरोवैश्यवातकः । कुर्याच्छूद्रवधेविप्रस्तप्तकृच्छ्रंयथाविधि १३१ एवंशु
द्धिमवाप्नोतिसंवर्तवचनंयथा । गोघ्नश्चातःप्रवक्ष्यामिनिष्कृतिंततःशुभां १३२

काम کی بس ہوکر کری ۱۳۰ تو ہتیا کریوالا کرچھہ اوراتی کرچھہ برت کری۔ شودر کو مارڈالنیوالا تپتہ کرچھہ برت بدھوپر بک کری ۱۳۱
اسطرح شُدّھ ہوتا ہے جیسا کہ سمرت مُن کا بچن ہے ۔۔ اب گئو بدھ کرنے والے کے اُدّھار ہونے کیواسطے پایشچت کہتے ہیں ۱۳۲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोवधकरनेवालागोशालामेंजाकरसंस्कारकरेगोदोनकेसमीपउसीगोशालामेंपंद्रहदिनतक
भूमिपरसोवे १३३ तत्कालस्नानकरेनाखूनऔरबालजिसमेंनपड़ाहोऐसेजलकेसाथभोजन

गोघ्नःकुर्वीतसंस्कारंगोष्ठेगोरूपसन्निधौ। तत्रैवक्षितिशायीस्यान्मासा
र्द्धंव्रतेन्द्रियः १३३ स्नानंत्रिषवणंकुर्यान्नखलोमविवर्जितः। सक्तुया
वकभिक्षाशीपयोदधिशकृन्नरः १३४ एतानिक्रमशोभ्यासीद्द्विजस्तत्पाप
मोक्षकः। गायत्रींचजपेन्नित्यंपवित्राणिचशक्तितः १३५ पूर्णेचैवाब्दमासे
चसविप्रान्भोजयेद्द्विजः। भुक्तवत्सुचविप्रेषुगांचदद्याद्विचक्षणः। १३६।

भक्षणकरे १३४ क्रमसेजौजौकरीसोदूधदहीऔरगोबरखावे - अपनीशक्तभरगायत्रीका
जपकरे १३५ पंद्रहदिनजबपूरेहोंतबब्राह्मणोंकोभोजनकरावेऔरगोदानदेवे १३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोधन اور بندھن مین بیت گئو ونکا مرن ہو جاے - یا دوا کی بے ترکیبی سے مرن ہو جاے تو دوگنا پراشچیت کرے ۱۳۷ - جو ایک گئو کو بہت آدمیون نے مل کر مار ڈالا ہو - تو ہتیا کا اوٹھار اپنے اپنے حصہ کے پرمان کرین ۱۳۸

व्यापन्नानांवहनांतुरोधनेबंधनेपिवा। भिषङ्मिथ्योपचारेचहिगुणंव्रतमा
चरेत् १३७ एकाचेद्हुमिःकाचिद्हैवाद्यापादिता क्वचित्। पादंपादंतुहत्या
यास्त्रोरयुतेपृथक्पृथक् १३८ यंत्रणेगोस्त्रिकित्सार्थेगूढगर्भविमोचने य
दितन्निपत्तिःस्यान्नसपापेनलिप्यते। १३९। औषधंस्नेहमाहारंददतो
ब्राह्मणेषुच। दीयमानेविपत्तिःस्यात्पुण्यमेवनपातकं ॥२४०॥२४०॥

گئو کے آرام ہونے کے واسطے اوسکا گربھ نکالتے وقت جو گئو مر جاے تو پاپ نہین لگتا ۱۳۹ اوکھد اور تیل اور بھوجن گئو اور براہمن کو دیوے - اوس سمے مین جو مرن ہو تو پاپ نہین لگتا ۱۴۰ ÷ ۱۴۰ ÷ ۱۴۰ ÷

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेदहन और नखहीन रोकने के पापके प्रायश्चित्त में पूरा अवर्त करे और बंधहीन में दो हिस्से और बंधहीन के पापके प्रायश्चित्त में तीन हिस्से करे १४१
पत्थर और लाठी और डण्डा और हथियार मारने पर - तीन दिन प्रायश्चित्त करे १४२ हाथी और घोड़ा और बैल और ऊंट

प्रायश्चित्तस्यपापंतुरोधेषुव्रतमाचरेत। हीपादौबंधनेचैवपादोनंयंत्रणोत
या १४१ पाषाणैलकुडैर्दंडैस्तथाशस्त्रादिभिर्नरः। निपातनेचरेत्सर्वंप्राय
श्चित्तंदिनत्रयं १४२ हस्तिनंतुरगंहत्वा महिषोष्ट्रकमेवच। तस्यवि
धेद्विजः कुर्यात्समरात्रमभोजनम् १४३ व्याघ्रंश्वानंखरंसिंहंऋक्षं
सूकरमेवच। एतान्हत्वाद्विजोमोहात्त्रि एवैवशुद्धति ॥ १४४ ॥

और बंधहीन - इन को मार कर के बड़ी सात दिन उपवास करे १४३ बाघ और कुत्ता और गदहा और सिंह और
रीछ और सूअर - इनको अज्ञानता से मारने वाला तीन दिन में शुद्ध होता है १४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

بن مین رہنے والے سب جات کے جیوون کو ناس کرے - دن رات گایتری اگن کے سمیپ بیٹھ کر جپے
توشٹہ ہو ۱۴۵ ہنس اور کوا اور بگلا اور مور اور کارنڈ - اور سارس اور بھاس اور چاس انکو مار کر تین دن

सर्वासामेवजातीनांमृगाणांवनचारिणां । अहोरात्रोषितस्तिष्ठेज्जपन्यैजा
तवेदसं १४५ हंसंकाकंबलाकांचवर्हिकारंडवावपि । सारसंचाशुभासोचंह
त्वात्रिदिवसंक्षिपेत् १४६ चक्रवाकंतथाक्रौंचंसारिकाशुकतित्तिरीन्
श्येनगृध्रानुलूकांश्चपारावतमथापिवा १४७ टिट्टिभंजालपादंचको
किलंकुक्कुटंतथा । एषांवधेनरःकुर्यादेकरात्रमभोजनं ॥ १४८ । १४८ ॥

برت کرے ۱۴۶ چکرواک اور کروچ اور مینا اور طوطا اور تیتر - اور باز اور گدھ اور الو اور کبوتر ۱۴۷ اور ٹیٹری
اور ہنرل اور کوکلا اور لگلٹ - انکو مار کر ایک رات بھوجن نہ کرے ۱۴۸ + ۱۴۸ + ۱۴۸ +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंस आदि जो पीछे कहे आये हैं उनको मारकर - एक दिन रात अग्नि के पास बैठकर गायत्री जपने से शुद्ध होता है १४९ मेंढक और साँप और बिल्ली और चूहा को मारकर - तीन दिन व्रत करे और ब्राह्मण को भोजन करावे

पूर्वोक्तानांतुसर्वेषांहंसादीनांमखेषतः। अहोरात्रोषितस्तिष्ठेज्जपन्नैजा
तवेदसं १४९ मंडूकंचैवहत्वाचसर्पमार्जारमूषिकं। त्रिरात्रोपोषितस्ति
ष्ठेत्कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् १५० अनस्थीन्ब्राह्मणोहत्वाप्राणायामेनशु
द्ध्यति। अस्थिमतांवधेविप्रःकिंचिद्ध्याहिचक्षणः १५१ यश्चांडालींद्विजो
गच्छेत्कयंचित्कामसंमोहितः। त्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहेतप्राजापत्यानुपूर्वकैः १५२

तो शुद्ध हो १५० बे हड्डी के जानवरों को मार प्राणायाम करने से ब्राह्मण शुद्ध होता है - हड्डी वाले जानवरों को मारकर कुछ दिन करने से शुद्ध होता है १५१ जो द्विज चांडाली अथवा किसी भोग करने के काम मोहित - दो तीन प्राजापत्य कृच्छ और तीन कृच्छ व्रत करने से शुद्ध होता है १५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम के बस ہو کر یا دیوا اچھا سی پوتشچلی کا گمن جو کرتا ہے - اوسکو کرچھہ اور چاندرائن برت پبتر کرتا ہے ۱۵۳ انٹ کی استری
اور دھوبن اور بس بھورن اور چمارن - کے ساتھ بھوگ کر کے کرچھہ اور چاندرائن برت کرے ۱۵۴ چھتری (چھنال ۱۲)

पुंश्चलीगमनंकृत्वाकामतोकामतोपिवा। कृच्छ्रंचांद्रायणेतस्यपावनेप
रमेस्मृते १५३ मैलृपींरजकींचैववेणुचर्मोपजीविनीम। एतागत्वाद्विजोमो
हाच्चरेच्चान्द्रायणव्रतम १५४ क्षत्रियामथवैश्यांवागच्छेद्यःकाममोहि
तः। तस्यसांतपनःकृच्छ्रोभवेत्यापापनोदनः १५५ शूद्रांतुब्राह्मणो
गत्वामासंमासार्द्धमेववा। गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्धति १५६।

اور بیس کی استری کے ساتھ جو گمن کرتا ہے کام کے بس ہو کر - اوسکا اُدّھار تپت کرچھہ سے ہوتا ہے ۱۵۵ شودر
کی استری کے ساتھ گمن کرنے سے براہمن پندرہ دن تک - گوموتر مین جو پکا کر بھوجن کرنے سے شُدّھ ہوتا ہے ۱۵۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण दूसरी स्त्री से गमन करके और अपनी सम्बन्धी की स्त्री से गमन करके प्राजापत्य व्रत करने से शुद्ध होता है
१५८ क्षत्री क्षत्राणी के साथ गमन करने से प्राजापत्य व्रत करने से शुद्ध होता है - वैश्य गऊ के साथ गमन करके चांद्रायण

विप्रामस्वजनांगत्वाप्राजापत्येनशुद्ध्यति। स्वजनांतुद्विजोगत्वाप्राजाप
त्यंसमाचरेत १५७ क्षत्रियांक्षत्रियोगत्वातदेवव्रतमाचरेत। नरोगोगम
नंकृत्वाकुर्याच्चांद्रायणव्रतं १५८ मातुलानींतथास्वस्रांसुतांवैमातुल
स्यच। एतागत्वास्त्रियोमोहात्सगकेणविशुद्ध्यति १५९ गुरोर्दुहितरंगत्वा
स्वसारंपितुरेवच। तस्यादुहितरंचैवचरेच्चांद्रायणंव्रतम ॥१६०॥१६०॥

व्रत करे १५८ मामों की स्त्री, सास और मामों की लड़की - इनके साथ गमन करके प्राकृ नाम प्रायश्चित्त करे
१५९ गुरु की कन्या और फूफी और बुआ की लड़की इनके साथ गमन करके चांद्रायण व्रत करे ॥१६०॥१६०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितृव्यदारगमनेभ्रातुर्भार्यागमेतथा। गुरुतल्पव्रतंकुर्यान्निष्कृतिर्नान्य
थाभवेत १६१ पितृभार्यांसमारुह्यमातृवर्जनराधमः। भगिनींमातुर
प्मांचस्वसारंचान्यमातृजाम १६२ एतास्तिस्रःस्त्रियोगत्वातप्तकृच्छ्रंसमा
चरेत। कुमारीगमनेचैतव्रतमेतत्समाचरेत १६३ पशुवेश्याभिगमने
प्राजापत्योविधीयते। सखिभार्यांसमारुह्यस्नुषांवाभगिनींतथा १६४

पितृव्य (चाचा १२) की स्त्री और भाई की स्त्री से गमन करके। गुरु की शय्या पर गमन करने में जो व्रत कहा है वह करे उसके सिवाय और तरह से शुद्ध नहीं होता १६१ बे माता मौसी और दूसरी माता से पैदा हुई बहन १६२ इन तीनों से गमन करके तप्तकृच्छ्र व्रत करे। कुमारी कन्या

के साथ गमन करने में यही व्रत करे १६३ पशु और वेश्या से गमन करके प्राजापत्य व्रत करे। सखि की स्त्री और पुत्र की स्त्री अथवा बहन

पुत्र की स्त्री और सास और सखी १६४ + १६४ + १६४ + १६४ + १६४ + १६४ + १६४ +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اور ماتا اور بھگنی - اور لڑکی انھون کے ساتھ گمن کرکے اُدھار نہین ہوتا ہے ۱۶۵ جو استری نیم مین ہو یا برت مین ہو اوسکے ساتھ گمن کرنے والا دوج - تپت کرچھ برت کرے اور دودھاری گئو کا دان کرے ۱۶۶

मातरंयोधिगच्छेच्चस्वसारंपुरुषाधमः । नतस्यनिष्कृतिर्दृष्टात्स्वांचैवत नुजांतथा १६५ नियमस्थांव्रतस्थांवायोभिगच्छेत्स्त्रियंद्विजः । सकुर्यात प्राकृतंकृच्छंधेनुंदद्यात्पयस्विनीं १६६ रजस्वलांतुयोगच्छेद्गर्भिणींपतितांत था । तस्यापविशुद्ध्यर्थमतिकृच्छ्रोविधीयते १६७ वैश्यजांब्राह्मणोगत्वा कृच्छमेकंसमाचरेत् । एवंशुद्धिःसमाख्यातासंवर्तस्यवचोयथा ॥ १६८ ॥

رجسولا استری اور گربھوتی استری اور پتت استری سے گمن کرکے - اوس پاپ کو دور کرنے کے واسطے اتی کرچھ برت کرے ۱۶۷ بیش کی استری سے گمن کرکے براہمن ایک کرچھ برت کرے - اس پکار کی شدھ کہی گئی جیسا کہ سمرت منو کا بچن ہے ۱۶۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी प्रकार से जो छत्री या बैश्य ब्राह्मनी से गमन करे - तो गोमूत्र मैं जो पकाकर महीने भर तक जो जव करी तब शुद्ध होवे

१६९ सूद्र जो काम के बस होकर ब्राह्मनी से गमन करे - तो गोमूत्र मैं जो पकाकर महीने भर तक जो जव करी तब शुद्ध हो १७०

कथंचिद्ब्राह्मणीं गत्वा क्षत्रियो वैश्य एव च। गोमूत्रयावकाहारो मासेनैकेन शुद्ध्यति १६९ शूद्रस्तु ब्राह्मणीं गच्छेत्कदाचित्काममोहितः। गोमूत्रयावकाहारो मासेनैकेन शुद्ध्यति १७० ब्राह्मणीं शूद्रसंपर्के कदाचित्समुपागते। कृच्छ्रं चांद्रायणं तस्याः पावनं परमं स्मृतम् १७१ चांडालं पुल्कसं चैव श्वपाकं पतितं तथा। एताः श्रेष्ठाः स्त्रियो गत्वा कुर्युश्चांद्रायणं त्रयं ॥१७२॥१७२

ब्राह्मन की स्त्री सूद्र से मिलाप करके - कृच्छ चांद्रायन व्रत करने से शुद्ध होती है १७१

चांडाल और पुल्कस और डोम और पतित के साथ मिलाप करने से तीन चांद्रायन व्रत करने से स्त्री शुद्ध होती है १७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اسکے اوپر انت دشٹ کی شدھی کو سنو - کہ جو سنیاسی ہو کر پُتر کے واسطے کوئی دُرمت اِستری گمن کرے ۱۷۳
تو سمان کرچھہ چاندراین برت کرے اور چھہ مہینہ اُپانت - یگیہ یا اگن یا سیام سبل انگی کا رکھے ۱۷۴

अतःपरंप्रदुष्टानांनिष्कृतिंश्रोतुमर्हथ। संन्यस्यदुर्मतिःकश्चिदपत्यार्थं स्त्रियंव्रजेत् १७३ कुर्यात्कृच्छंसमानंततषण्मासांस्तदनंतरं। विषाग्नि श्यामशबलांस्तेषामेवंविनिर्दिशेत् १७४ क्षीणंतथाचरणेह्यधिमासंगमे तथा। पतनेष्वप्ययंदृष्टःप्रायश्चित्तविधिःशुभः १७५ हृणंविप्रतिपत्तौचपाव नःप्रेत्यचेहच। गोविप्रप्रहतेचैवतथाचैवात्मघातिनि ॥ १७६ ॥ १७६ ॥

اور وہ اِستری جو ایسا کام کرے یا اَدھ ماس مین گمن کرے - یا پتن کرے تو یہی پرائشچت کی سنجھہ بدھ ہے ۱۷۵
اِسلیے سنکھیون کیواسطے پتن کرنے والی اس لوک مین اور پرلوک مین یہی بدھی - گئو اور براہمن گھاتی اور آتم گھاتی کی مرزی ۱۷۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

سجن اپنا کلیان چاہنے والا آنسو نہ گراوے - اور جو ان مین سے کسی مُردہ کو لیجاتا ہے یا جلاتا ہے ۱۷۷ تو وہ
اُودک دان کرکے چاندراین برت کرے - اوس مُردہ کو کیول اسپرش کرکے آنسو جو نہ پتت ہون ۱۷۸ تو باپ
تلانجلی ۱۲

नैवाभ्युपपत्तनंकार्यंसद्भिःस्त्रैयोमिकांक्षिभिः । एषामन्यतमंप्रेतंयोवहेत्तदहे
तवा १७७ कृत्वाचोदकदानंतुचरेच्चांद्रायणव्रतं । तच्छवंकेवलंस्पृष्ट्वा
स्नानेपातितंयदि १७८ पूर्वकेष्वप्यकारीचेदेकाहंक्षपणंतथा । महा
पातकिनांचैवतथाचैवात्मघातिनां १७९ उदकंपिंडदानंचश्राद्धंचै
वहियत्कृतं । नोपतिष्ठतिनत्सर्वंराक्षसैर्विप्रलुप्यते ॥ १८० ॥ १८१ ॥

واُدون کے کام کا ادھکاری اوس دن نہین رہتا ہے - مہا پاتکی اور اسیطرح آتم گھاتی کا ۱۷۹
اُودک دان اور پنڈدان اور سرادھ جو کرے - تو اوسکو نہین ملتا ہے سب راچھس لوگ لیجاتے ہین ۱۸۰

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

چنڈال کے ہاتھ سے جو دوج مارے گئی ہین اور دانت والی جیو سے اور شانپ سے اور براہمن کے شاپ سے جو مارگئی ہین اونکی سراد نکرے ۱۸۱
جو موتر اور بشٹا کھا جانے سے اسدھ ہو۔ اور کتہ آدِ کو چھو لیا ہو تو اسنان کرکے ایکہزار گایتری جپے ۱۸۲

चांडालैस्तुहतायेतुद्विजादंष्ट्रिसरीसृपैः । श्राद्धंतेषांनकर्तव्यंब्रह्मदंडहताश्चये १८१ कृत्वामूत्रपुरीषेतुभुक्त्वोच्छिष्टस्तथाद्विजः । स्पृष्ट्वास्पृष्टेज पेद्व्याःसहसंस्नानपूर्वकं १८२ चांडालंपतितंस्पृष्ट्वाशवमंत्यजमेवच उदक्यांसूतिकांनारींसवासास्नानमाचरेत् १८३ स्पृष्टेनसंस्पृशेद्यस्तुस्नानंतस्यविधीयते । ऊर्ध्वमाचमनंप्रोक्तंद्रव्याणांप्रोक्षणंतथा ॥ १८४ ॥

چانڈال اور پتت کو چھو کر اور مردہ اور بلیچھہ۔ اور کماری اور پرسوتی استری کو چھو کر بستر سہت اسنان کرے ۱۸۳
جسنے پتت کو چھوا ہو اوسکو چھو کر اسنان کرنا چاہیئے۔ اور اچمن کرکے سب چیزون پر جل چھڑک دے ۱۸۴

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चانڈال آدِ کو چھُوکر جو اُتم دِوج اشُدّھ ہو۔ وہ گوموتر مین جو پکاکر تین دن بھوجن کرے تو شُدّھ ہو ۱۸۵ جو اِسترِی رجسُولا ہوا وسکو کُتّہ اسپرش کرے اور دوسری رجسُولا اسپرش کرے۔ تو جے دِن رجُو دھرم باقی ہوتے دِن برت کری

चंडालाद्यैस्तुसंस्पृष्ट उच्छिष्टश्चेद्द्विजोत्तमः। गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेण
विशुद्धति १८५ शुनापुष्पवतीस्पृष्टपुष्पवत्यान्ययातथा। शेषाण्य
ह्न्युपवसेत्स्नात्वाशुद्ध्येद्घृताशना १८६ चांडालभांडसंस्पृष्टंपिवेत्कूपग
तंजलं। गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेणविशुद्धति १८७ अंत्यजैःस्वीकृतेती
र्थेनदीगोषुनदीषुच। शुद्धतेपंचगव्येनपीत्वातोयमकामतः ॥ १८८ ॥

پھر اسنان کرکے گھی پینے سے شُدّھ ہوتی ہے ۱۸۶ چانڈال کا برتن جس کنوئین مین گر پڑا ہو اوس کنوئین کا پانی پینے والا تین دن تک گوموتر مین جو پکاکر کھانے سے شُدّھ ہوتا ہے ۱۸۷ جو تیرتھ چانڈالون نے انگی کار کر رکھا ہے اور تالاب اور ندی اون تیرتھون کا جل پینے والا پنچ گویہ کھانے سے شُدّھ ہوتا ہے ۱۸۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जس کنوان مین مدرا کا گھڑا ڈوبا ہوا وسکا جل اور ناک کا جل - پی جانے سے دن رات اُپاس کرکے پنچ گبیہ سی شُدھ ہوتا ہے

१८९ جس کنوئین مین موتر اور بشٹا پڑا ہوا وسکا جل پینے والا - تین رات مین شُدھ ہوتا ہی اور گھڑی مین موتر اور بشٹا پڑا ہو

सुराघटप्रपातोयंपीत्वानासाजलंतथा । अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येपि
वेद्विजः १८९ कूपेविण्मूत्रसंसृष्टाप्राश्यचापोद्विजातयः । त्रिरात्रेणैव
शुद्धंतिकुंभेसंतपनःस्मृतः १९० वापीकूपतडागानामुपहतानांविशोध
नं । अपांघटशतोद्धारःपंचगव्यंचनिक्षिपेत् १९१ स्त्रीक्षीरमाविकंपी
त्वासंधिन्यास्त्वेवगोःपयः । तस्यशुद्धिस्त्रिरात्रेणद्विजानांचैवभक्षणे १९२

تو اوسکا جل پینے والا تین پہر برت کرنے سی شُدھ ہوتا ہی १९० باولی یا کنوان یا تالاب جو بھرشٹ ہو گیا ہو تو اوسمین سو گھڑے پانی نکال

ڈالے اور پنچ گبیہ چھوڑے १९१ جو دوج استری کا دودھ اور بھیڑی کا دودھ اور سندھنی گئو کا دودھ تین رات تک پیا ہوا جو گھی سی سورج کو دیا ہو تو دس دن تک

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

بِسّا اور موتر کھا جانے سے پراجاپت برت کرے ۔ کُتّہ اور کوّا اور بیل کا جوٹھا کھانے سے تین دن میں شُدھ ہوتا ہے
۱۹۳ بلّی اور چوہا کا جوٹھا کھانے سے دودھ پنچ گویہ کھاے ۔ سوّر کا جوٹھا کھانے سے تین رات برت کرنے سے شُدھ ہوتا ہے ۱۹۴

विण्मूत्रभक्षणेचैवप्राजापत्यंसमाचरेत् । श्वकाकोच्छिष्टभोच्छिष्टभ
क्षणेतुत्र्यहंद्विजः १९३ विडालमूषिकोच्छिष्टपंचगव्यंपिवेद्द्विजः । सू
च्छिष्टंतथाभुक्त्वात्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति १९४ पलांडुलशुनंजग्ध्वानयैवग्राम
कुक्कुटं । छत्राकंविड्वराहंचचरेत्सांतपनंद्विजः १९५ श्वविडालखरो
ष्ट्राणांकपिंजोमायुकाकयोः। प्राश्यमूत्रंपुरीषंवाचरेच्चांद्रायणंव्रतं १९६ ॥

پیاز اور لہسن اور گانون کا مُرغا اور دھرتی کا پھول اور سوّر کا ماس کھانے سے تپت کرچھہ برت کرے تو شُدھ ہو ۱۹۵ کُتّہ
اور بلّی اور گدھا اور اونٹ اور بندر اور سیار اور کوّا الّو کا موتر اور بِسٹا کھا جانے سے چاندراین برت کرے ۱۹۶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बासी अन्न और जिस अन्न मेन बाल या कीड़े पड़ गये होन - या जिस अन्न को नीच लोगन ने देखा हो ऐसे अन्न को खानी से नीच गिनेगा
भोजन करी १९७ चाण्डाल के बरतन मेन और कुम्हारी के बरतन मेन भोजन करके - गोमूत्र मेन जो पकाकर पन्द्रह दिन तक खाने

अन्नं पर्युषितं भुक्त्वा केशकीटैरुपद्रुतं । पतितैरीक्षितं वापि पंचगव्यं द्विजः
पिबेत् १९७ अन्त्यजे भाजने भुक्त्वा त्युदक्याभाजने तथा । गोमूत्रयावका
हारो मासार्द्धेन विशुद्ध्यति १९८ गोमांसं मानुषं चैव शुनो हस्तात्समाहृतं
। अभक्ष्यं तद्भवेत्सर्वं भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत् १९९ चंडालेसंकरे विप्रश्वपा
केपुल्कसेपिवा । गोमूत्रयावकाहारो मासार्द्धेन विशुद्ध्यति ॥ २०० ॥

तो शुद्ध हो १९८ गऊ का मांस और आदमी का मांस और कुत्ते का जूठा मांस खानी के जोग नहीं हे उसका खानेवाला चान्द्रायण करने
से शुद्ध होता हे १९९ चाण्डाल के साथ भोजन करने से ब्राह्मन - पन्द्रह दिन तक गोमूत्र मेन जो उबाल कर खाये तो शुद्ध हो २००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतित के साथ संगम होने से एक महीना और पंद्रह दिन - गोमूत्र में जौ पकाकर खाने से शुद्ध होता है २०१ पतित
के द्रव्य ब्राह्मण के लिये या पतित की बस्तु भोजन करले तो उस द्रव्य को त्याग करके अति कृच्छ व्रत करे २०२

पतितेनतुसंपर्कंमासंमासार्द्धमेववा। गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनवि-
शुद्धति २०१ पतितादृव्यमादत्तेभुंक्तेवाब्राह्मणोयदि। कृत्वातस्यस
मुत्सर्गमतिकृच्छ्रंचरेद्द्विजः २०२ यत्रयत्रचसंकीर्णमात्मानंमन्यतेद्वि
जः। तत्रतत्रतिलैर्होमोगायत्र्याप्रत्यहंद्विजः २०३ एषएवमयाप्रोक्तः
प्रायश्चित्तविधिःशुभः। अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तंनचोच्यते ॥ २०४ ॥

जहां जहां द्विज अपना संकट जाने - तहां तहां गायत्री का मंत्र पढ़ पढ़ कर तिलों से होम करे २०३ ये प्रायश्चित
की विधि हमने कही - और जो जो पाप नहीं देखे गये हैं उनका प्रायश्चित नहीं कहा है २०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान اور جپ اور ہوم اور پرانا یام اور برت بید پڑھنے سے دوج پاپون سے چھوٹتا ہے اسمین سندیہ نہین ہے

۲۰۵ سونا دان اور گئودان اور بھوم دان - یہ تت کال پاپون کا ناس کرتے ہین چاہے وہ پاپ دوسرے

दानैर्होमैर्जपैर्नित्यंप्राणायामैर्द्विजोत्तमः । पातकेभ्यःप्रमुच्येतवेदाभ्या
सान्नसंशयः २०५ सुवर्णदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच । नाशयत्यायु
षापापान्यजन्मकृतान्यपि २०६ तिलंधेनुंचयोदद्यात्संयताद्विजा
तये । ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः २०७ माघमासेतुसंप्राप्ते
पौर्णमास्यामुपोषितः । ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्वासर्वपापैःप्रमुच्यते २०८

جنم کے بھی ہون ۲۰۶ جو کوئی تلون کی گئو بنا کر بدیا دان براہمن کو دیتا ہے - وہ برہم ہتیا آدی پاپون سے چھوٹتا ہے اسمین سندیہ
نہین ہے ۲۰۷ جو ماگھ مہینہ مین پورنماسی کا برت کرکے - براہمنو نکو تل دان دیتا ہے وہ سب پاپون سے چھوٹ جاتا ہے ۲۰۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कातक की पूरनमासी को बरत करके - सोना اور بستر اور ان دان کرنے سے دشکرت سے چھوٹتا ہے ۲۰۹ اين مين اور

بیکھو مین اور پتی پات مین اور دن اگہن اور چندر گرہن اور سورج گرہن مین جو کچھ دیا جاتا ہے وہ کبھی چکے نہین ہوتا ۲۱۰

قسم سنکرانت ۱۲ شام کو وقت ۱۲

उपनासोनरोभूत्वापौर्णमास्यांतुकार्तिके । हिरण्यवस्त्रमन्नंचदत्वात
रतिदुष्कृतम् २०९ अथनेविषुवेचैवव्यतीपातेदिनक्षये । चंद्रसूर्यग्र
हेचैवतंभवतिचाक्षयं २१० अमावस्यांचंद्रसोचसंक्रांतौचविशेषतः ।
शुक्लप्रतिपदांतिथवोभानुवारस्तथैवच २११ तत्स्नानंजपोहोमोब्रा
ह्मणं नांचभोजनं । उपवासस्तथादानमेकैकंपापनाशनं ॥ २१२ ॥

اماوس اور دوادشی اور سنکرانت یہ تتھین بہت سبھ ہوتی ہین اور اتوار بھی ۲۱۱ انھون مین اشنان کرنا اور ہوم کرنا اور جپ کرنا اور برہمن

جو جن کرانا اور برت کرنا اور دان کرنا ہر ایک پاپ کا نشٹ کر سکتا ہے ۲۱۲ + ۲۱۲ + ۲۱۲ + ۲۱۲ + ۲۱۲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नानः शुचिर्धौतवासाः शुद्धात्मा विजितेंद्रियः। सात्विकं भावमास्थाय
दानं दद्यादिच्छया णः २१३ समव्याहृतिभिः कार्यो द्विजैर्होमोजिता त्मभिः।
उपपातकशुध्यर्थं सहस्रपरिसंख्यया २१४ महापातकसंयुक्तो लक्षहोमं स
दाचरेत्। मुच्यते सर्वपापेभ्यो गायत्र्याचैव पावितः २१५ अभ्यसेच्चतया पुण्यां
गायत्रीं वेदमातरं। गत्वारण्येनदीतीरे सर्वपाप विशुद्धये ॥ २१६ ॥ २१६ ॥

स्नान करके पवित्र होकर धोया हुआ कपड़ा पहन कर इन्द्रियों को जीत कर सत्वगुण में होकर शुद्ध मन दान करे २१३
सात तो व्याहृतियों से एकहजार उपपातकों के शुद्ध होने के वास्ते होम करे २१४ महापातक की शुद्धी के वास्ते
दूज एक लाख गायत्री से होम करे तो सब पापों से छूट जाता है २१५ सब पापों से
छूटने के वास्ते नदी किनारे अरण्य में जाकर गायत्री का जप करे २१६ + २१६ + २१६ + २१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नान करके आचमन करे फिर प्राणायाम करे - तीन बार प्राणायाम करके गायत्री जपने से द्विज शुद्ध होता है २१७ सूखा कपड़ा पहन कर आसन में बैठ कर पवित्र हाथ में पवित्री पहन कर गायत्री का जप करे २१८ पांच दिन गायत्री जप

स्नात्वाऽऽचम्यविधिवत्ततः प्राणान्समापयेत् । प्राणायामैस्त्रिभिःपूतो गायत्रींतुजपेद्द्विजः २१७ अक्लिन्नवासाःस्थलगः शुचौदेशेसमाहितः । पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमाचरेत् २१८ ऐहिकामुष्मिकंपापंसर्वं निरवशेषतः । पंचरात्रेणगायत्रींजपमानोव्यपोहति २१९ गायत्र्यासुपरं नास्तिशोधनंपापकर्मणां । महाव्याहृतिसंयुक्तांप्रणवेनचसंजपेत् २२० ॥

करने से दोनों जन्म के पाप छूट जाते हैं २१९ पापों को शुद्ध करने के वास्ते गायत्री से अधिक कोई जतन नहीं है - महाव्याहृति सहित और ओंकार सहित गायत्री का जप करे २२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचारी निराहारः सर्वभूतहितेरतः। गायत्रालक्षजाप्येनसर्वपापैःप्र
मुच्यते २२१ शयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वान्नंविगर्हितम्। गायत्र्या
लक्षंतुजपंकृत्वाविमुच्यति २२२ अहन्यहनिवोधीतेगायत्रींयोवैद्विजोत्त
मः। मासेनमुच्यतेपापादुग्धाःकंचुकाद्यथा २२३ गायत्रींयस्तुविप्रोवै
जपेन्नियतःसदा। सयातिपरमंस्थानंवायुभूतःसमूर्तिमान् २२४॥

सो दोष आठ हजार गायत्री जपने से छूट जाता है २२२ जो उत्तम दूध मीठा गायत्री जपा करता है वह एक महीने में सब पापों से छूट जाता है जैसे सांप केंचुल से छूटता है २२३ जो दूध नीम करके गायत्री जपता है वह पवन रूप होकर परम स्थान को पहुंचता है २२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ब्रह्मचारी निराहार होकर सब जीवों का हित करने वाला एक लाख गायत्री जपने से सब पापों से छूट जाता है २२१ जो जगत कराने जोग नहीं हैं उनको जगत कराने से और निंदित अन्न भोजन करने से जो दोष होता है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

اونگ کے ساتھ جگت سات بیاہرتیون سہت نتیہ من مین گایتری تین بار جپے ۲۲۵ پرانون کو کھینچ کر پرانایام
کی بدھ کہی گئی۔ اور تین پرانایام ساودھان ہو کر نت کرے ۲۲۶ پرانایام کرنے سے کایک باچک مانسک

प्राणवेनचसंयुक्ता व्याहृतीःसप्तनित्यशः । गायत्रींशिरसासार्द्धमनसात्रिःप
रेद्विजः २२५ निगृह्यचात्मनःप्राणःप्राणायामोविधीयते । प्राणायामञ्च
यंकुर्यान्नित्यमेवसमाहितः २२६ मानसंवाचिकंपापंकायेनैवचयत्कृतं ।
तस्सर्व्वंनाशमायातिप्राणायामप्रभावतः २२७ ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तुयजुः
षावासमथापिवा । सामानिसरहस्यानिसर्व्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २२८ ॥ २२९ ॥

پاپ چھوٹتے ہین ۲۲۷ رگ بید کے ابھیاس اور یجر بید کی ساکھا اور ساما بید سہت رہسیہ کے پاٹھ
سے سب پاپ چھوٹ جاتے ہین ۲۲۸ + ۲۲۸ + ۲۲۸ + ۲۲۸ + ۲۲۸ + ۲۲۸ + ۲۲۸

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटिस मंत्र की साखा और पुरुष सूक्त और मधु साखा के पाठ करने से पितरों समेत पाप से छूट जाता है २२९ ब्राह्मन रिचा का मंडल जो रुद्र सूक्त मेन कहा गया है। और बामदेवजी की पुरुष रिचा और साम वेद

पावमानीं तथाकौत्सीं पुरुषंसूक्तमेवच। जप्तापापैः प्रमुच्यतेतत्सपित्र्यं माधुछंदस २२८ मंडलंब्राह्मणंरुद्रंसूक्तोक्ताश्चबृहद्व्रया। वामदेव्यंबृहत्सामसर्वपापैः प्रमुच्यते २३० धर्मशास्त्रमिदंपुण्यं संवर्तेनतुभाषितम्। अधीत्यब्राह्मणोगच्छद्ब्रह्मणः सद्मशाश्वतं २३१ चांद्रायणंतुसर्वेषांपापानांपावनंपरम। कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपरंस्थानमेवच २३२ इतिसंवर्तप्रणीतधर्मशास्त्रंसमाप्तंशुभं॥ लिख्यतंस्वामीदयालुना

के पढ़ने से सब पापों से छूट जाता है २३० सनबत मंत्र का बनाया हुवा यह पवित्र धरम शास्त्र पाठ करने से बराबर यज्ञ का फल देने वाला है २३१ चांद्रायण बरत सब पापों को पवित्र करता है और जिसके करने से शुद्ध पवित्र होती है और परम पद मिलता है २३२ सनबत ऋषि का बनाया हुवा धरम शास्त्र समाप्त हुवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Entered in Database
Signature with Date

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

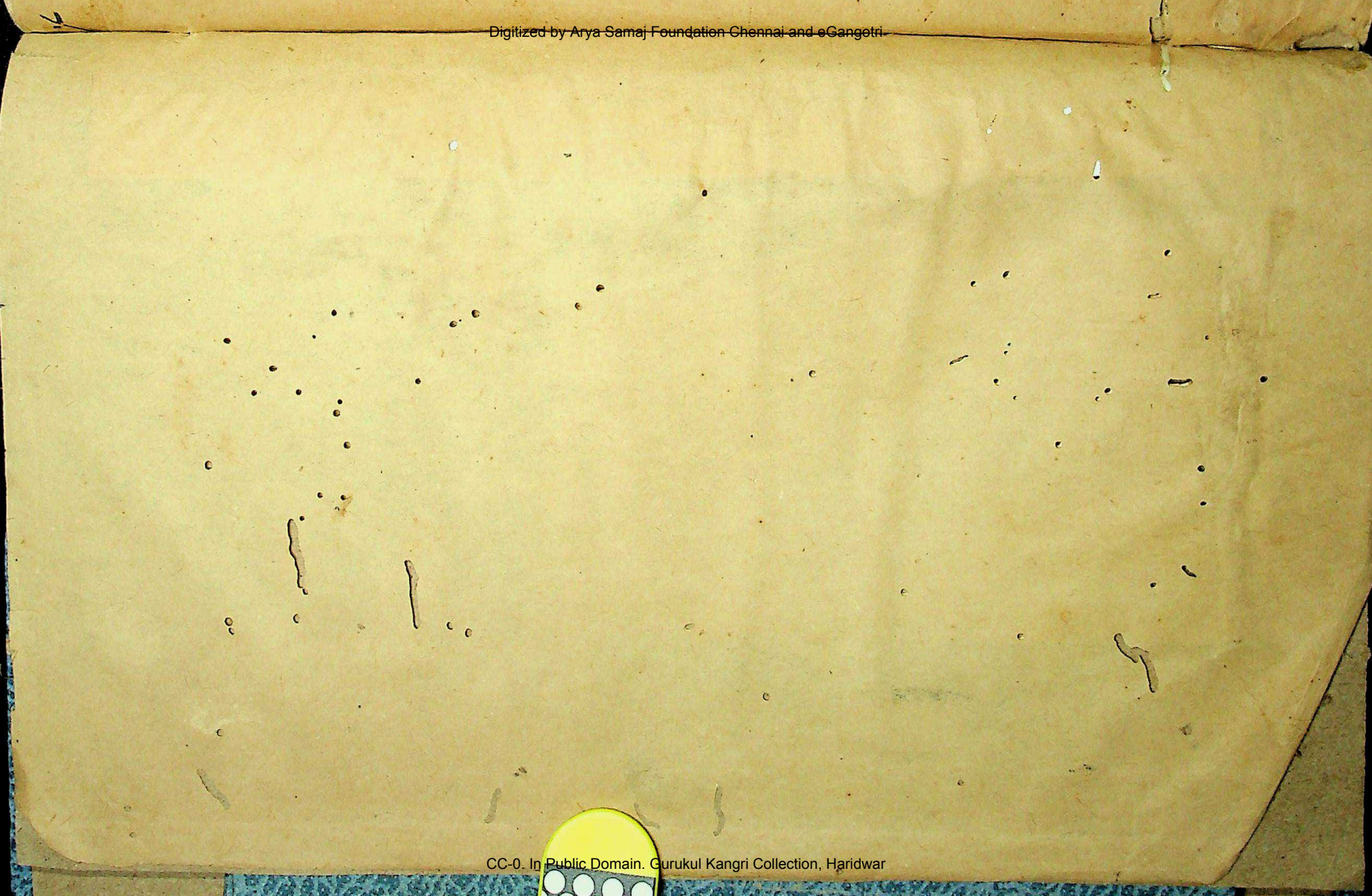

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

225
2 दि

गुरुकुलकागड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर दो नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

30 OCT 1986

G. 2/82/22-24

१०००।६.५६।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

612 9960. 150392

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

996ठ०.
150392 612/1
1024०.
शुक्ला और प्रसाद वाराणसी, 2001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar